Regd. No. RAJHIN10563/65, Postal Regd. No. RJ/SRO/9559/2012-2014
Posted at Shantivan-307510 (Abu Road) on 1-6 of the month.

# ज्ञानामृत

वर्ष 49, अंक 1,जुलाई 2013 (मासिक)
मूल्य 7.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 90 रुपये

**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित 'शान्ति व अहिंसा की पुनर्स्थापना में मीडिया की भूमिका' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभागाध्यक्ष डॉ. मानसिंह परमार, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. शीलू बहन तथा अन्य।

**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के लिए आयोजित 'स्वर्णिम संसार के लिए दिव्य ज्ञान' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी कोटा के कुलपति प्रो. विनय कुमार पाठक, शूलिनी यूनिवर्सिटी सोलन के कुलपति प्रो.पी.के. खोसला, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. शीलू बहन तथा अन्य।

**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** महिला प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, भारतीय राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज की निदेशिका बहन रजना कुमार, गुजरात सरकार के महिला तथा बाल विकास विभाग की सचिव ब्र.कु. अंजू शर्मा, पंजाब केसरी समाचार पत्र समूह की निदेशिका बहन किरण चोपड़ा, ब्र.कु. चक्रधारी बहन तथा डॉ. सविता बहन।

**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** कला तथा संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के संस्कृति मंत्री भाता संजय देवताले, ब्र.कु. मृत्युंजय भाई, ब्र.कु. दिव्य प्रभा बहन तथा अन्य।

1.**कुरुक्षेत्र-** 'अहिंसा परमोधर्म एवं श्रीमद्भगवद्गीता' विषयक राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए पंजाब के राज्यपाल महामहिम भाता शिवराज पाटिल, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति लै.जनरल (रिटायर्ड) डॉ.डी.डी.एस संधू, महामण्डलेश्वर स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. ऊषा बहन, पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जी.नबाब सिंह, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश भाता वी.ईश्वरैय्या तथा अन्य। 2.**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए राजस्थान की राज्यपाल महामहिम बहन मारग्रेट एल्वा। मंचासीन हैं राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी तथा अन्य।

# शुभाशीष

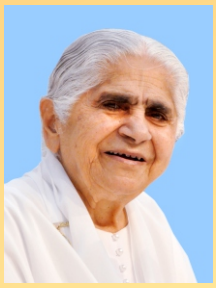

लाखों मनुष्यों के जीवन में ज्ञान की सरिता बहाकर उन्हें श्रेष्ठ चिन्तन की ओर प्रवृत्त करने वाली ज्ञानामृत पत्रिका के 48 वर्ष पूरे हो रहे हैं। मुझे यह जानकर अति हर्ष हो रहा है कि आदि पिता और मातेश्वरी जी के वरद् हस्तों से प्रारंभ की गई, राजयोगी भाई-बहनों के हृदयस्पर्शी अनुभवों से ओत-प्रोत इस पत्रिका की मांग देश तथा विदेश में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों के ह्रास के कारण आज चारों तरफ घनघोर अंधेरा छाया है। ऐसे में बुराइयों के अंधकार को चीरते हुए ज्ञान-दीप की तरह यह ज्ञानामृत पत्रिका सबके दिलों में श्रेष्ठ विचारधाराओं का उजाला फैला रही है। मानव मात्र को कर्त्तव्यों के प्रति सजग कर, विकारों और विकृतियों पर विजयी बनने का बल प्रदान कर रही है।

जो भी भाई-बहनें अपना अमूल्य समय निकालकर इसमें लेख भेजते हैं, जो इसे सुन्दर रूप देकर सब तक पहुँचाने की सेवा करते हैं, जो इसका अध्ययन और मनन कर स्वयं को शक्तिशाली बना रहे हैं और जो इसे घर-घर पहुँचाकर ज्ञान-दान द्वारा पुण्य लाभ ले रहे हैं, उन सबको मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

वर्ष 2013-14 हेतु ज्ञानामृत के प्रिय पाठकों को यही कहूँगी कि दिव्य जीवन बनाने की ओर अग्रसर करने वाली इस पत्रिका द्वारा जन-जन को ईश्वरीय संदेश देते हुए मानव मन को परिवर्तन करने की सेवा कर बापदादा का नाम बाला करें और सर्व की दुआओं के पात्र बनें। दिन-प्रतिदिन अधिक से अधिक भाई-बहनें इससे लाभान्वित होते रहें।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ

ब्र.कु. जानकी

## अमृत-सूची


- गुप्त दान महाकल्याण *(सम्पादकीय)* ..... 4
- दीदी सदा एकव्रता होकर रही .6
- बाबा ने बचाया जेल से .....8
- विदेश में ईश्वरीय सेवा .....9
- निश्चय की परीक्षा..... 11
- कहते जिसे मधुबन *(कविता)* .12
- कहनी है इक बात हमें.....13
- मनमानी और बुद्धिमानी.....16
- नये घुटने, नया अनुभव .....18
- जेल बनी आश्रम .....19
- भगवान आ चुके हैं .....20
- पीछा करता है कर्म फल .....21
- निर्णय आपका .....22
- भय की भयानक बीमारी .....23
- एक बार सुन जायें..*(कविता)* 25
- परमात्मा से जुड़िये..... 26
- बुझे दीपक को लौ मिल गई ..27
- ईश्वरीय पढ़ाई से .....29
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- सकारात्मक विचार .....32
- बाबा *(कविता)* .....33
- पहचानिए संकल्पों की .....34



### सदस्यता शुल्क

| भारत | वार्षिक | आजीवन |
|---|---|---|
| ज्ञानामृत | 90 /- | 2,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 90/- | 2,000/- |
| **विदेश** | | |
| ज्ञानामृत | 1,000 /- | 10,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 1,000/- | 10,000/- |

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

**शुल्क के लिए सम्पर्क करें -**
**09414006904, 09414154383**
**hindigyanamrit@gmail.com**

# गुप्त दान महाकल्याण

किसान जब भी बीज बोता है, उस पर मिट्टी डाल देता है। वह जानता है कि बीज को खुला छोड़ दिया जाए तो उसे चिड़िया खा सकती है, बरसात की बूँद गिरने से फूल कर बेकार हो सकता है, सीधी कड़ी धूप की किरणें उसे अन्दर से सुखा सकती हैं, गिलहरी कुतर सकती है अर्थात् उसके अस्तित्व को कई खतरे हैं। मिट्टी डलते ही वह छिपकर सुरक्षित हो जाता है और अन्तर्क्रिया द्वारा विकसित होने के सभी अनुकूल साधन उसे प्राप्त हो जाते हैं। फिर वही बीज कई गुणा फल के साथ पुन: हमें मिल जाता है। वह गुप्त रहकर बढ़ गया, प्रत्यक्ष रहता तो बढ़ने की बात छोड़िए, खुद भी नष्ट हो जाता।

**गुप्त चीज़ बढ़ती है**

यही बात श्रेष्ठ कर्म पर भी लागू होती है फिर चाहे वह श्रेष्ठ कर्म धन द्वारा हो, तन की सेवा द्वारा हो, मनसा शुद्ध संकल्पों द्वारा हो या वाणी द्वारा ज्ञान-दान के रूप में हो। दान कोई भी हो, गुप्त रहे तो ही फलता है और करने वाले को पुन: पुन: दान करने की ताकत प्रदान करता है। प्राप्तकर्त्ता की भी आध्यात्मिक, मानसिक, चारित्रिक उन्नति होती है। भगवान भी कहते हैं, गुप्तदान अच्छा होता है, यदि कोई प्रकार का अहंकार आता है कि मैंने किया तो उसकी ताकत आधी हो जाती है। संसार में कई लोग ऐसे हैं जो दान करते हैं तो अपना हाथ सबको दिखाते हैं कि मैंने यह-यह किया, पर जब चोरी करते हैं तो हाथ को कमर के पीछे छिपा लेते हैं कि मैंने कुछ नहीं किया। 'गुप्त चीज़ बढ़ती है', इस सिद्धान्त के अनुसार उनका प्रत्यक्ष दान तो शनै: शनै: कम हो जाता है और गुप्त चोरी शनै: शनै: बढ़ जाती है। लोग उन्हें दानी ही समझते रह जाते हैं पर उनका गुप्त कर्म अन्दर ही अन्दर फैलकर उनके पुण्यों का खाता चट कर जाता है।

शरीर में बीमारी भी जब तक गुप्त रहती है, बढ़ती जाती है। जब पकड़ में आ जाती है तो उसका इलाज शुरू हो जाता है। जब हम बैंक में पैसे जमा करना चाहते हैं तो किसी को कानों कान खबर नहीं देना चाहते। हम जानते हैं, पता पड़ने से हमारा धन असुरक्षित हो जाएगा। बहुत बखान करने से सेवा और श्रेष्ठ कर्म रूपी धन भी दाता के खाते से चला जाता है।

**दान, महादान और वरदान**

धन या स्थूल वस्तु का दान करने वाला केवल दानी कहलाता है। ज्ञान का दान करने वाला महादानी और गुण-शक्तियों का दान करने वाला वरदानी कहलाता है। स्थूल धन या वस्तु का दान अल्पकाल का सुख देता है। हमने किसी को एक रुपया दान दिया तो हमारे पास तो नहीं रहा ना। कोई खाने की वस्तु दी तो भी हमारे पास कम हो गई। दूसरे को अल्पकाल की सन्तुष्टि मिली इसलिए यह केवल दान कहा जाएगा। इसकी भेंट में ज्ञान का दान महादान कहलाता है। हमने एक पुस्तक पढ़कर अपनी बुद्धि में रख ली, फिर उस पुस्तक का दान किया, उसे कई अन्य पढ़ सकते हैं, बार-बार पढ़ सकते हैं, उसे अगली पीढ़ी तक भी सहेजा जा सकता है। भावार्थ यह है कि ज्ञान का दान देने से कम नहीं होता और लेने वाला उसे आगे देकर दानी बन सकता है। लेकिन ज्ञान को जीवन में उतारने में मेहनत करनी पड़ती है। यदि कोई स्वयं के जीवन को गुण और शक्तियों से सम्पन्न कर अपने कर्मों

से, संग से, सम्पर्क से गुणों का रंग दूसरों को लगाता है तो यह वरदान बन जाता है। इसी वरदान से किसी का जीवन कौड़ी से हीरे तुल्य बन जाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा का जीवन ऐसा ही वरदानी जीवन था जिनके संग से लाखों बच्चे गुणवान बनने और शक्तिवान बनने का वरदान पा सके हैं।

### व्यक्ति का कार्य उसकी परछाई नहीं कर सकती

वर्तमान संसार में दानियों की कमी नहीं है। धार्मिक-सामाजिक जगत में धन या तन से सेवा करने वालों की भरमार है। फिर भी कई बार सवाल पूछा जाता है कि इतना सब करने वालों के मन में अशान्ति, चरित्र में धब्बे और जीवन में रोग-शोक क्यों? क्या उनका दान-पुण्य उन्हें ऐसे आड़े वक्त में मदद नहीं करता? इसके उत्तर में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कई कारण हो सकते हैं। अप्रत्यक्ष तो यह कि पूर्व का कोई बहुत जटिल कर्म का बोझ है, जो इतने दान-पुण्य के बाद भी समाप्त नहीं हो पाया है। प्रत्यक्ष कारण यह हो सकता है कि दान-पुण्य निम्न स्तर का हो। निम्न स्तर का अर्थ है जितना किया उससे ज्यादा दिखावा किया, बढ़ा-चढ़ाकर बखान किया। जैसे जो कार्य व्यक्ति से होना हो वो उसकी परछाई से नहीं हो पाता, इसी प्रकार, जो भाग्य सच्चे त्याग से प्राप्त होने वाला हो वो त्याग के दिखावे मात्र से प्राप्त नहीं हो सकता। दिखावा तो बिना आत्मा के मुर्दे जैसा होता है, जो दिखता तो है पर अन्दर कुछ होता नहीं। बहुत प्रचार करने से श्रेष्ठ कर्म रूपी बीज को मान-बड़ाई रूपी गिलहरी कुतर जाती है और वह आगे फलता नहीं, पुन: श्रेष्ठ कर्म करने की ताकत बचती नहीं।

### दान की रकम चढ़ जाती है वसूली की भेंट

अखबार के एक-एक इंच में लिखी गई विषय-वस्तु की कीमत होती है। हथेली जितनी जगह की लिखत की भी हजारों रुपये कीमत वसूली जाती है। यह कीमत इसलिए ली जाती है कि वह हमारी सूचना को लाखों तक पहुँचा रहा है। यदि हमने अपने दान की सूचना कहीं लिखकर या अन्य तरीके से लाखों-करोड़ों तक पहुँचा दी तो उसकी भी तो कीमत वसूली जायेगी ना। इस प्रकार, दान की रकम वसूली की भेंट चढ़ जाती है और यदि दान की रकम कम है और प्रचार ज्यादा तो यह वसूली कम भी पड़ सकती है, ऐसे में दान का पुण्य मिलने के बजाय कर्ज भी चढ़ सकता है।

### मैं गुप्त, भगवान प्रत्यक्ष

इसलिए कहा गया, 'गुप्त दान, महाकल्याण।' श्रेष्ठ कर्म ऐसा हो जो एक हाथ से करो तो दूसरे को पता ना पड़े। नेकी करो पर दरिया या कुएँ में छिपा दो, किसी को पता ना पड़े कि किसने नेकी की। यदि यह भावना आ गई मैंने किया, मैं करता हूँ तो करनकरावनहार छिप जाता है और अहंकार सीना तान कर खड़ा हो जाता है। अहंकार का अर्थ है (अहम् + कार) मैं करता हूँ। फिर तो भगवान के स्थान पर हम करनकरावनहार हो जाते हैं। जो हम हैं नहीं, वो अपने को मानने से बेचैनी होती है, सुकून गायब होता है, नींद उचट जाती है, जबान कड़वी और चिड़चिड़ी हो जाती है, माथा भारी और पीड़ित होने लगता है। ये सब अहंकार रूपी बीमारी के लक्षण हैं। इस बीमारी की दवा है, 'मैं आत्मा निमित्त हूँ, करनकरावनहार मेरे बाबा हैं, उन्होंने मुझे करने की शक्ति और योग्यता दी, मैं उनका शुक्रगुज़ार हूँ, उनकी छत्रछाया में रहकर आगे भी सुख देता रहूँ, उनकी दी ज़िम्मेवारियों को गुप्त रहकर निभाता रहूँ ताकि वो संसार में प्रत्यक्ष हो जाएँ।'

**– ब्र.कु. आत्म प्रकाश**

# दीदी सदा एकव्रता होकर रही

*दीदी मनमोहिनी जी का लौकिक नाम गोपी था और वे एक धनाढ्य परिवार से यज्ञ में अपनी लौकिक माँ और बहिनों के साथ समर्पित हुई थी। उनका बाबा से अटूट प्यार होने के कारण, बाबा के मुख से जो कुछ निकलता दीदी उसे प्रैक्टिकल स्वरूप में अवश्य लाती। भारत में सन् 1952 से जब सेवायें शुरू हुईं तो दीदी इलाहाबाद और दिल्ली में सेवा के निमित्त बनी और कई वर्षों तक दिल्ली, कमलानगर सेवाकेन्द्र में रहकर अपनी सेवायें देती रहीं। सन् 1965 में मातेश्वरी जी ने अपने भौतिक शरीर का त्याग किया, उसके बाद बाबा ने दीदी को मधुबन में अपने साथ सेवा पर रखा। दीदी यज्ञ की हर आंतरिक कारोबार को देखती और यज्ञ-वत्सों का पूरा ध्यान रखती। दीदी मनमोहिनी और दादी प्रकाशमणि जी की अलौकिक जोड़ी के लिए प्रसिद्धि थी कि शरीर दो हैं, आत्मा एक है। दीदी ने कहा, दादी ने किया, दादी ने कहा, दीदी ने किया। दीदी-दादी ने सेवासाथियों को और आने वाले जिज्ञासुओं को मात-पिता की पूरी भासना दी। प्रस्तुत हैं दादी जानकी जी के उनके प्रति दिल के गहरे, प्रेम भरे उद्‌गार.... – सम्पादक*

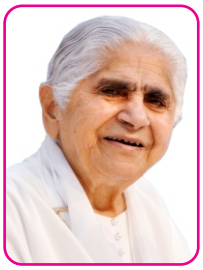

मुझे दीदी ने शिव शक्ति का बैज पहनाया था। तो याद रहता है कि मैं शिव की शक्ति हूँ। हमारे पास बैज के सिवाय और कुछ नहीं है, हमारी पहरवाइश भी सेवा करती है। दीदी ने सिखाया कि हर बात में निमित्त होके कैसे संभालना है। अलर्ट रहना सबसे ज़रूरी है। कभी पढ़ाई में, योग में, सेवा में सुस्ती न आये। दीदी सदा पढ़ाई में रेग्युलर और पंक्चुअल रही। कभी क्लास में देरी से नहीं आई। कर्मातीत बनने वाली आत्मा को ध्यान है निद्राजीत बनने का।

दीदी ने सिखाया कि हमारा सदा सभी के साथ बहुत प्यार हो। सदा सीखने की और सच्चा होके रहने की भावना हो। मैं जो कहूँ सो होवे, नहीं, जो बाबा ने कहा है वही हो, यही भावना हो। मुख्य बात है एक-दो के लिए सम्मान और प्यार का संस्कार, उससे सुखी हैं। दीदी सदा कहती थी, याद में रहना मेरा काम है। मेरी स्मृति में एक बाबा रहे, सेवा पीछे है। याद में रहने से यात्रा पर हूँ, यात्रा के जो नियम हैं, उन्हें एक्यूरेट पालन करना है। याद की यात्रा में सामने लक्ष्य पर आपेही सब पहुँचेंगे, किसी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है।

दीदी सदा कहती, कभी भी मूड खराब नहीं करना। उदास होना या किसी से ईर्ष्या रखना यह बहुत बुरी बला है। अपने को इसमें इतना संभाल कर रखो जिससे बाबा के गीत गाते-गाते गायन योग्य, सिमरण योग्य, पूजन योग्य बन जाओ। दीदी रोज़ अमृतवेले चार बजे योग में हाज़िर हो जाती थी। खुद ही योग कराती थी। कितनी भी बातें हों, कभी कोई बात दीदी के मुख पर नहीं आई होगी। जो बाबा-मम्मा ने सिखाया, दीदी ने प्रैक्टिकल करके दिखाया। बाबा को याद करना सीखना हो तो उन्हें सामने रखो। उनकी सूरत को देखो।

दीदी ने इशारे करके मीठा बनना

सिखाया। मधुबन के बहुत से भाई-बहनों ने दीदी की पालना ली है। दीदी ने सबको मज़बूत बनाया है। विशेषता सबमें हैं, दादी की विशेषता अपनी, दीदी की अपनी लेकिन सर्वगुण सम्पन्न सबको बनना है। अब नही बनेंगे तो कब बनेंगे। बाबा के कदम पर चलना, यह दीदी ने सिखाया है। श्रीमत सरमाथे पर हो, दीदी ने बहुत ध्यान दिलाया, कभी मनमत पर चलने नहीं दिया। पढ़ाई पर ध्यान पूरा दिया, प्रश्न ऐसे निकालती थी जो सबको फेल कर देती थी।

बाबा के साथ अटूट प्यार था। बाबा के अव्यक्त होने के बाद दीदी ऐसी दृष्टि देती थी, जो सबको बाबा की भासना आती थी। विदेशी भाई-बहनों ने भी दीदी की दृष्टि से बहुत अच्छे-अच्छे अनुभव किये हैं। दीदी ने बोला कम होगा, दृष्टि से बहुत भासना दी, अनुभव कराये। शाम को ठीक समय पर योग में आती थी, ऐसे लगता था, आफिस से बाबा को साथ लेकर योग में आ रही है। पुरुषार्थ का मज़ा लेना दीदी से सीखा। उनके पुरुषार्थ में कभी थकावट नहीं देखी। पुरुषार्थ है ही बाबा को याद करने का। दीदी के साथ की ये बातें याद आती हैं, जो वर्तमान में बहुत मदद करती हैं। और बातें पास्ट इज़ पास्ट कर दो, ये बातें पास्ट नहीं की जा सकतीं। बीती को चितओ नहीं, आगे की रखो न आश, ऐसा सहजयोगी, एक्यूरेट योगी बनना, यह दीदी से सीखा है। अच्छी-अच्छी बातें दीदी से सदा की हैं, और कोई बात आपस में कभी नहीं की। योग क्या है, ज्ञान की गहराई क्या है, सदा यही रूहरिहान होती थी। यह बड़ों से सीखा है।

जब बाबा अव्यक्त हुआ, दीदी-दादी ने मुझे बुलाया, कहा, अभी तुम्हें पूना छोड़कर यहाँ रहना पड़ेगा। बाबा ने डायरेक्शन दिया है, दादी मुरली सुनायेगी, क्लास तुम्हें कराना है। दीदी मुझे बुलाकर बताती थी, यह बात और स्पष्ट करना। सेवा में सदा उमंग-उत्साह में रहना, बाबा की उम्मीदों को पूरा करना, यह दीदी ने कूट-कूट कर पक्का कराया। दीदी का प्रिय गीत था, अब घर जाना है....। यह नहीं कहती थी, तैयारी करनी है, सदैव तैयार रहती थी। घर में रहना माना बाबा के साथ रहना। अन्त में सारा दिन यही धुन लगा दी। अभी हमको भी यह धुन है, अब घर जाना है लेकिन बाबा को प्रत्यक्ष करके जाना है। वारिस बनाना दीदी से सीखा। पूरा स्वाहा करा देती थी। जो यज्ञ के लिए मिला वह सीधा यज्ञ में जाये, यह संस्कार दीदी ने डाल दिये। एक पापड़ भी अपने लिए नहीं रखा। जो यज्ञ के लिए करे वह यज्ञ में सफल हो। जो करे वह गुप्त करे।

दीदी की विशेषताओं की बहुत बड़ी माला है, कभी एक पेनी भी व्यर्थ नहीं जाने दी। सफल करने वाले को एक का पद्मगुणा बाबा देगा। गरीब का एक रुपया, साहूकार का एक हजार.. इसके भी हमारे पास मिसाल हैं। दीदी का नाम गोपी था, गोपी का पार्ट पहले दीदी ने ही बजाया। कितने बंधनों को काटकर बाबा के पास आ गई। फिर सादा रहना सिखाया, लट्ठे का कपड़ा पहनाया। बाबा दीदी को भण्डारे में भेजता था, देखो, भोजन बनाते वा खाते कोई आपस में बातें तो नहीं करते हैं। दीदी ऐसे आती थी जैसे कोई सी.आई.डी आफिसर आये। सब सावधान हो जाते थे। ऐसी थी हमारी मीठी दीदी। हमको देखकर भी कोई सावधान, खबरदार हो जाये। सर्व सम्बन्ध एक बाबा के साथ कैसे हों, वह दीदी से सीखा है। दीदी सदा एकव्रता होकर रही इसलिए दीदी में प्योरिटी की पर्सनैलिटी झलकती थी। इतनी हमारी पर्सनैलिटी में प्योरिटी हो, तो व्यर्थ ख्याल आ नहीं सकता। इतनी ईमानदारी हो, नि:स्वार्थ भाव हो। मान-मर्तबे की भूख न हो।

निराकारी स्थिति में रहकर, आकारी सूक्ष्मवतनवासी का अनुभव करते, साकार सृष्टि में सेवा अर्थ पार्ट बजा रहे हैं, इसमें दीदी बहुत एक्यूरेट रही है। बाबा की शिक्षायें प्रैक्टिकल धारण करने में दीदी ने साथ दिया है। बाबा ने, मम्मा के शरीर छोड़ने के

बाद, दीदी को सेवा की जवाबदारी दी, दीदी को मधुबन में बिठा लिया। दीदी ने, सब कायदे अनुसार चलें, इस पर सबका ध्यान खिंचवाया है।

जैसे दीदी-दादी ने दिन-रात सेवायें की हैं, हम भी सेवा द्वारा सुख देके सन्तुष्ट करें, सदा खुश रहें, कैसी भी बात आवे पर निराशा न आये, उमंग न चला जाये, उम्मीद से नाउम्मीद न बन जायें, अच्छे पुरुषार्थियों को देख ईर्ष्या का अंश न आये, द्वेष भाव न हो, थकान न हो। दीदी ने प्रैक्टिकल में इन सब शिक्षाओं का स्वरूप बनकर दिखाया और स्वरूप से सबको सिखाया।

हमारे सर्व संबंध एक बाबा से जुड़ाने के निमित्त हमारी मीठी दीदी रही है। बाबा के साथ दीदी का सखा संबंध रहा है। हमेशा कहती थी, तुम बाबा को सखा बनाकर याद करो ना, ऐसे सूखी याद नहीं करो। उसे साजन समझकर याद करो। श्रीमत सदा सिरमाथे पर रहे, मनमत चल नहीं सकती, तभी बाबा ने यहाँ बैठने लायक बनाया है।

एक बार बाबा ने कहा था, बच्ची, बाबा कहे, कुएं में कूद जाओ, तो कूदेंगी! दीदी ने उसी समय कहा, हाँ बाबा। तो बाबा ने कहा, बच्ची, बाप ऐसे कभी कह सकता है क्या? इसमें भी पहचान चाहिए। दीदी ने हर कदम श्रीमत पर उठाया। विश्व सेवा के लिए दीदी ने निमित्त बनाया। ❖

# बाबा ने बचाया जेल से

**ब्रह्माकुमार रामसिंह, अलीगढ़**

दिसम्बर, 2011 के एक मंगलवार के सुबह नौ बजे मैं सेवाकेन्द्र पर क्लास करके घर लौट रहा था। रास्ते में रेलवे लाइन पड़ती है। लाइन पार करते समय मेरी साइकिल का पैडल लाइन में उलझ गया। करीब दो मिनट तक उसे निकालने में व्यस्त रहा परन्तु वह निकलने का नाम ही नहीं ले रहा था। एक राहगीर ने भी हर संभव कोशिश की परन्तु पैडल लाइन से नहीं निकला। लगभग बीस मीटर की दूरी पर ही राजधानी ट्रेन आ रही थी। मुझे बाबा ने प्रेरणा दी कि बच्चे, साइकिल छोड़ दे। मैंने साइकिल को छोड़ दिया और पलक झपकते ही राजधानी मेरी साइकिल को घसीटती हुई ले गई तथा ग्रीन सिगनल पर रुक गई। मैं लाइन के समानान्तर दो फीट दूर जा गिरा। ऐसा महसूस हुआ कि मैं पत्थरों पर नहीं बल्कि किसी गद्दे पर लेटा हुआ हूँ।

वहीं पर एक आर.पी.एफ के जवान ने मुझे उठाया। मैंने सोचा कि यह मेरी मदद कर रहा है परन्तु ऐसा नहीं था। वह मेरा हाथ पकड़ कर थाने ले जाने लगा। मैं बेबस था क्योंकि रेलवे लाइन पार करना एक कानूनी अपराध है। थाने में सभी पुलिसकर्मी कहने लगे, भाई, अब तो आपकी ज़िन्दगी जेल में ही कटेगी। कम से कम पांच या दस साल की सज़ा होगी। मैं मन ही मन बाबा से प्रार्थना कर रहा था, बाबा, जेल की तो मुझे कोई परवाह नहीं है परन्तु बिना भगवान को भोग लगाये जेल का भोजन कैसे खाऊँगा, अभी तक मेरी कोई भी मुरली मिस नहीं हुई है, मुरली कैसे सुनूँगा।

करीब एक घन्टे बाद एक सब इंस्पेक्टर, जो जान पहचान के थे, की ड्यूटी दिल्ली से बदलकर अलीगढ़ लग गई। जब वे थाने पहुँचे तो मैंने पूछा, क्या आप मुझे पहचानते हैं? वे बोले, क्यों नहीं। आप तो बहुत ही सीधे-साधे ब्रह्माकुमार हो। मुझे बैज लगा हुआ था। उन्होंने मुझे किसी भी परेशानी के बिना थाने से छुड़ा दिया, मैंने बाबा को लाख-लाख शुक्रिया बोला, वाह बाबा वाह, इन भाई जी को निमित्त बनाकर आपने मुझे सहज ही मुक्त करा दिया। मेरी लोहे की साइकिल के टुकड़े-टुकड़े हो गये परन्तु हाड़-माँस के शरीर को खरोंच तक नहीं आई। यह था बाबा का कमाल! ❖

# विदेश में ईश्वरीय सेवा का प्रारंभ - 8

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में हमने लिखा था कि आदरणीया दादी प्रकाशमणि के साथ हम कैनेडा, यू.एस.ए. तथा लंदन गये। लंदन से केन्या, तंजानिया, सुरीनाम और लुसाका देशों में गये। लुसाका में राम भाई ने दादी प्रकाशमणि जी द्वारा अच्छी ईश्वरीय सेवायें कराईं। लुसाका से हम रोडेशिया गये, वहाँ भी अच्छी सेवायें हुईं।

इससे पूर्व काफी समय पहले वेदांती बहन रोडेशिया में सेवा करने हेतु जाना चाहती थी। उन्होंने प्यारे शिवबाबा से पूछा कि बाबा, रोडेशिया में कैसे सेवा करें? बाबा ने कहा, बच्ची, आपको भेजने वाला बाबा, आपसे पहले वहाँ पहुँच गया है इसलिए अब आप सेवा के लिए जा सकती हो। वेदांती बहन एवं उनके साथी भाई-बहनें रोडेशिया में गये और वहाँ प्रवचन किया। तभी एक गुजराती भाई वेदांती बहन के पास आया और कहा, हमने आश्रम बनाया है, आप उसे देखने आइये। वेदांती बहन गई तो देखा कि उस भाई ने बाबा के चित्रों का म्यूज़ियम बनाया है। बहन ने पूछा, आपने ये चित्र कहाँ से लाये? उस भाई ने कहा, हम माउंट आबू गये थे, वहाँ से 10 चित्रों का सेट खरीदा। मुझे इन चित्रों से बहुत प्रेरणा मिलती है। लोगों की भी अच्छी सेवा होती है। शिवबाबा का संदेश सौ प्रतिशत सच था और इससे यह भी सिद्ध होता है कि यह विश्व विद्यालय शिवबाबा की श्रीमत पर ही चलता है। इस यात्रा के दौरान भी दादी प्रकाशमणि जी, मैं और वेदांती बहन आदि रोडेशिया गये और अच्छी सेवायें हुई।

वहाँ से हम मॉरिशियस गये। मॉरिशियस देश में भी ईश्वरीय सेवा के प्रारंभ की एक कहानी है। वेदांती बहन, राम भाई आदि लुसाका से सेवार्थ मॉरिशियस आये थे, वहाँ किसी पहचान वाले के घर में रहे। वहाँ के विष्णु हॉल में राम कथा चल रही थी और व्यासपीठ पर भारत के एक महात्मा बैठे थे। पूर्णाहुति के कार्यक्रम का टीवी पर सीधा प्रसारण हो रहा था। वेदांती बहन और उनके सभी साथी सफेद वस्त्रधारी थे। महाराज जी ने वेदांती बहन को विष्णु हॉल में देखकर कहा, आइये बहनजी, आइये, रामायण कथा की पूर्णाहुति में आशीर्वचन दीजिये। वेदांती बहन ने महाराज को पूछा कि महाराज, आपने हमें कैसे पहचाना? महाराज जी ने कहा कि एक बार मेरी कथा गुजरात के जामनगर में हुई थी तो वहाँ आपका स्टॉल लगा हुआ था, वहाँ आपके ईश्वरीय ज्ञान को सुना और ईश्वरीय साहित्य भी पढ़ा इसलिए मैंने आपको पहचान लिया। वेदांती बहन के आशीर्वचन का भी सीधा प्रसारण टीवी पर हुआ। इस कारण वहाँ सेवा बहुत अच्छी हुई। इसके बाद क्वाट्रे बोर्नस (Quatre Bornes) में एक मकान किराये पर मिल रहा था। वह लेना है या नहीं, यह पूछने के लिए उन्होंने मुझे फोन किया। मैंने कहा कि इसका निर्णय तो दादी प्रकाशमणि जी ही लेंगे। उन्होंने कहा, अभी हमारे पास इतना समय नहीं है, हम इंतजार भी नहीं कर सकते। अगर आप हाँ कहेंगे तो हम मकान लेंगे, नहीं तो हम शाम को हवाई जहाज से वापिस लुसाका पहुँच जायेंगे। मैंने वह मकान किराये पर लेने के लिए हाँ किया। इस प्रकार वहाँ सेवा शुरू हो गई। फिर जब मधुबन में आया तो अव्यक्त बापदादा से माफी माँगी कि मैंने दादी प्रकाशमणि जी की अनुमति बगैर मॉरिशियस में मकान किराये पर लेने के लिए कह दिया। तब अव्यक्त बापदादा ने कहा कि बच्चे, आपने छुट्टी नहीं दी लेकिन मैंने छुट्टी दी इसलिए इस बात का अफसोस मत करो। शिवबाबा तो सर्वशक्तिवान हैं, वे किसी को भी निमित्त बनाकर कार्य करा देते हैं।

मॉरिशियस में वहाँ के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अन्य बड़े-बड़े नेताओं को बाबा का संदेश दिया और इस प्रकार वी.वी.आई.पी. लोग इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में

आये। मॉरिशियस में सेवाओं की अति व्यस्तता के कारण दादी प्रकाशमणि जी कुछ अस्वस्थ हो गईं। यह समाचार जब आबू में दीदी मनमोहिनी जी को मिला तो उन्होंने बहनों (दादी जी की मेजबान) से कहा कि पहले स्वास्थ्य फिर सेवा। बड़ी दीदी को जब अफ्रीका में राम भाई से सेवा का निमंत्रण मिला था तब भी दीदी जी ने कहा था कि पहले सेफ्टी फिर सेवा। मेरा सबसे अनुरोध है कि बड़ी दीदी के दिये हुए दोनों ही स्लोगन्स सदा ही अपने जीवन में पालन करें।

मॉरिशियस से हम ऑस्ट्रेलिया गये, वह सफर बहुत लंबा था। हम पहले पर्थ पहुँचे और फिर सिडनी पहुँचे। दादी जी को आराम करना आवश्यक था इसलिए मैंने एयरपोर्ट पर आधा घंटा प्रेस कांफ्रेंस में सेवा की। सिडनी में दोपहर में तीन बजे एक पाँच सितारा होटल (Five Star Hotel) के ऑडिटोरियम में वी.आई.पी. के लिए दादी जी का प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया था। दादी जी का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मुझे कहा गया कि आप पहले जाकर दस मिनट भाषण करना। जब मैं होटल में पहुँचा तो स्वागतकर्त्ता भाई, सभागृह के द्वारपाल भाई दोनों से टॉपिक के बारे में पूछा परंतु उन्होंने कहा, हमें मालूम नहीं। स्टेज पर कार्यक्रम सूची में देखा तो वहाँ भी टॉपिक नहीं लिखा था। फिर केन भाई ने मेरा नाम उद्घोषित किया। जैसे ही वे पोडियम से नीचे उतरे, मैंने उनसे कान में टॉपिक का नाम पूछा। मातेश्वरी जी की शिक्षा के अनुसार उस समय मैंने बाबा को याद किया और टॉपिक पर प्रवचन शुरू किया। दादी जी को आराम करना अनिवार्य था इसलिए मुझे वहाँ पर दो घंटे से अधिक समय बोलना पड़ा। बाद में दादी जी पहुँचे और उन्होंने दस मिनट प्रवचन किया।

मुझे अज्ञानकाल में प्वाइंट्स निकालकर फिर प्रवचन करने का अभ्यास था। किंतु मातेश्वरी जी जब हमारे पास 18 महीने रहे तब उन्होंने सिखाया कि प्वाइंट्स निकालकर प्रवचन करना ठीक नहीं है। प्रवचन करने से पहले बाबा को कहना चाहिए कि बाबा ये मन-बुद्धि आपके हैं, अब मैंने इन्हें आपके हवाले कर दिया, अब जो इस सभा के लिए जरूरी है, वह हमसे बुलवाइये। इस विधि से आपके प्रवचन में ईश्वरीय ज्ञान और बल की मात्रा बढ़ जायेगी।

फिर हम सिडनी से मेलबर्न, न्यूजीलैण्ड आदि स्थानों पर गये। सिडनी में अपनी संस्था के रजिस्ट्रेशन का कारोबार भी हुआ। न्यूजीलैण्ड में भी कानूनी छत्रछाया में संस्था की रजिस्ट्री का कारोबार बहुत अच्छी रीति से हुआ।

ऑस्ट्रेलिया से हांगकांग गये, वहाँ पर पुराने सिंधी भाई-बहनें काफी थे। वर्ष 1954 में दादी प्रकाशमणि जी और वर्ष 1971 में मैं और ऊषा जी आदि भी वहाँ गये थे। वहाँ के रहने वाले भारतीय भाई-बहनों में ईश्वरीय ज्ञान और स्नेह का बीज पड़ा और वे सभी अच्छे सहयोगी बने।

वहाँ से भारत भ्रमण का 21 दिन का हवाई जहाज का टिकट हमने 200 डॉलर में लिया और भारत के सभी प्रमुख स्थानों पर जैसे दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, मद्रास, कानपुर, भोपाल आदि होते हुए अंत में अहमदाबाद होकर आबू पहुँच गये। इस प्रकार साढ़े चार मास विदेश यात्रा और फिर दो मास देश की यात्रा कर हम आबू पहुँचे। आबू में दादी जी का भव्य स्वागत किया गया और मधुबन में 108 प्रकार का ब्रह्मा भोजन रखा गया। इस प्रकार विदेश यात्रा का 1974 का यह कार्यक्रम समाप्त हुआ। बाद में 1975 में मैं और ऊषा जी फिर अमेरिका गये और कानूनी कारोबार पूरा किया। इंकम टैक्स छूट भी मिल गई। फिर लंदन में भी इंकम टैक्स की छूट के लिए कारोबार हुआ। ठीक इसी तरह का कानूनी कारोबार हमने ऑस्ट्रेलिया जाकर किया। तत्पश्चात् हांगकांग, मलेशिया, सिंगापुर आदि-आदि स्थानों पर भी अपना विश्व विद्यालय रजिस्टर्ड हुआ और कानूनी छत्रछाया के कारण ईश्वरीय सेवा विहंग मार्ग से बढ़ती गई। ❖

# निश्चय की परीक्षा और विजय

● ब्रह्माकुमार राजू, पांडव भवन, आबू पर्वत

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक ब्रह्मा बाबा को पहले-पहले विष्णु का और बाद में विनाश तथा नई दुनिया का साक्षात्कार हुआ। शिव बाबा के इशारे से ब्रह्मा बाबा को निश्चय हो गया कि यह पुरानी दुनिया विनाश हो, नई दुनिया आने वाली है। बाबा को वैराग्य आया और हीरों का कारोबार समेट कर जितना भी धन मिला, ट्रस्ट बनाकर समर्पित कर दिया। ज्ञान-यज्ञ में लगभग 380 भाई-बहनें समर्पित हो गये, सभी निश्चय और नशे से चल रहे थे कि हमने तो भगवान को पा लिया। भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद जब स्थानान्तरित हो, भारत (आबू) में आये तो बृजकोठी में रहने लगे। खाने के लिए अनाज नहीं, हाथों में पैसा नहीं, बीमार हो गये तो इलाज की व्यवस्था नहीं। बेगरी पार्ट निश्चय की परीक्षा का समय था। जो निश्चय बुद्धि होकर रहे उन्हों को बाबा ने अलग-अलग स्थानों पर सेवा के लिए भेजा। सेवा के लिए भी रहने का स्थान, साधन, पैसे आदि नहीं थे। जानकी दादी सुनाते हैं कि स्टेशन के प्लेटफार्म पर बैंच पर सोकर रात बिताई। मनोहर दादी सुनाती थीं कि दिल्ली, जमुना के किनारे एक बिना दरवाजे के मकान में महीनों तक रही। इन महान आत्माओं के निश्चय के बल और त्याग, तपस्या के फल से आज यज्ञ का इतना बड़ा विस्तार हुआ है।

ब्रह्मा बाबा को भी बहुत परीक्षायें पास करनी पड़ीं। वे ऐसे बेगर बन गये जो किराये के मकानों में रहे। ज्ञान भी उस समय सम्पूर्ण नहीं था, सिर्फ इतना ही था कि मैं आत्मा हूँ, भगवान की सन्तान हूँ, यह पुरानी दुनिया अब खत्म हो, नई दुनिया बनेगी और हमें पवित्र बन देवी-देवता बनना है, बस। पहले का ध्यान-दीदार का पार्ट भी बन्द हो गया। फिर भी ब्रह्मा बाबा निश्चय के बल से बेफिक्र बादशाह बनकर रहे कि भगवान का कार्य है, जैसे भी भगवान चलायेगा, ज़रा भी संशय नहीं।

शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा के द्वारा समय-समय पर जो रहस्य खोले, वे अब सामने दिख रहे हैं। आगे क्या-क्या होने वाला है, वह भी मुरली के माध्यम से सुना रहे हैं जैसे कि –

**भगवानुवाच** (शिव बाबा के महावाक्यों से) – आगे चलकर किसी के भी पैसे कोई काम में नहीं आयेंगे, साइंस के साधन होते भी साधन कोई काम में नहीं आयेंगे, बीमारी अति बढ़ेगी परन्तु दवाई ही नहीं होगी तो डाक्टर क्या करेंगे, एक बूंद पानी के लिए भी तरसेंगे, अनाज होगा परन्तु खाने योग्य नहीं होगा, अकाल होगा, भूख मरेंगे, परिस्थिति ऐसी होगी कि कोई घर से बाहर नहीं निकल सकेंगे, सिविल वार होगा, खून की नदियाँ बहेंगी, बॉम्ब की बारिश करेंगे, सुख व शान्ति का नाम-निशान नहीं रहेगा, दुख और भय का वायुमण्डल होगा, प्रकृति के पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा, इन आंखों से जो कुछ दिखाई दे रहा है वह कुछ भी नहीं रहेगा। सबको मालूम पड़ जायेगा कि यह वही महाभारत की लड़ाई है, भगवान भी आ चुके हैं। ये सब बातें सन् 1936 से निराकार परमात्मा शिव, ब्रह्मा बाबा के तन में प्रवेश करके सुनाते आये हैं और अब विश्व भर में लाखों भाई-बहनें भगवान के महावाक्य सम्मुख या दूर रहकर भी रोज सुन रहे हैं।

**शिवबाबा ने ली गैरन्टी** (शिव बाबा के महावाक्यों से) – बाबा ने कहा है कि अन्त तक तुम्हें दाल-रोटी ज़रूर मिलेगी, बाप के ऊपर बलिहार हुए तो बाप भूखा नहीं मारेंगे, अगर कुछ भी नहीं है तो वतन में बुलाकर शूबीरस पिलायेंगे। तुम्हें साक्षात्कार द्वारा बहलाते रहेंगे, कोई तुम्हारा कुछ अहित नहीं कर सकेगा, प्रकृति भी दासी बनकर तुम्हारी सेवा करेगी। प्रकृति की आपदाओ में सेफ्टी के

स्थान पर पंहुचने के लिए टचिंग होगी और लास्ट ट्रेन वा लास्ट बस जाने के बाद ही विनाश होगा। नज़दीक का स्थान भले ही पानी में डूब जायेगा परन्तु तुम्हारा स्थान सेफ रहेगा। यादगार में जो गायन है कि भट्ठी में बिल्ली के पूंगरे सेफ रहे, सेंक तक नहीं आया, वह तुम्हारा ही गायन है।

**लेकिन शर्त है** (शिव बाबा के महावाक्यों से) - जो आवश्यकता के समय पर बाबा की सेवा में नि:स्वार्थ और निर्विघ्न रह मददगार रहे हैं उनको आवश्यकता के समय बाबा मदद करेगा। जिन्होंने श्रीमत प्रमाण सम्पूर्ण पवित्र जीवन बनाया होगा, बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी, योगयुक्त होंगे अर्थात् अपने को आत्मा समझकर शिवबाबा की याद में रहेंगे, जो अशरीरी वा फरिश्ता स्वरूप के अभ्यासी होंगे, जो सम्पूर्ण नष्टमोहा होंगे, उनका ज़िम्मेवार बाप है, नहीं तो आप हो।

**निश्चय की परीक्षा** – जैसे स्कूलों में परीक्षा के समय टीचर पढ़ाते नहीं हैं, अपना पढ़ा हुआ काम में लगाना होता है, टीचर भी साक्षी होकर देखते रहते हैं। इसी प्रकार, यहाँ भी ज़रूर भगवान साकार में आकर पढ़ाना बंद कर देंगे, साक्षी हो जायेंगे। हमारी परीक्षा है बाबा की शिक्षाओं को प्रेक्टिकल कर्मों में दिखाना। परन्तु यह मायावी दुनिया है, यहाँ भगवान और उनकी शिक्षाओं प्रति भ्रम पैदा करने वाली बातें भी आयेंगी। दुख में फंसाने के लिए कई चीजें सुख या प्राप्तियों की टोपी पहन कर आयेंगी जिन्हें परखना होगा। बाबा ने कहा है कि अन्त में बहुत आश्चर्यजनक बातें दिखाई देंगी परन्तु मन में कोई आश्चर्य न हो, कोई प्रश्न न हो कि यह क्या हो रहा है। ऐसा भी होता है क्या? इसके बजाय मन में यह आये कि नथिंग न्यू, कल्प-कल्प यह रिपीट हुआ है और जो कुछ हो रहा है वह कल्याणकारी है।

**अभी से सावधानी** – इस लेख द्वारा पाठकों को यही इशारा दिया जा रहा है कि इस विनाश काल में सबकुछ संभालते हुए भगवान के साथ प्रीतबुद्धि बन जन्म-जन्मान्तर के लिए अपने श्रेष्ठ भाग्य को निश्चित कर लें। किसी भी व्यक्ति या वैभव के आकर्षण में बुद्धि को भटकने न दें। जब चारों ओर हाहाकार होगा उसके बीच हमें भी रहना होगा, न कोई साधन काम में आयेंगे और न कोई किसी को साथ दे सकेंगे। उन परिस्थितियों से पार करने के लिए जब भगवान साथ देने की गैरन्टी ले रहे हैं तो क्यों न उनका साथ अच्छी तरह से पकड़ लें। हर परिस्थिति में कल्याण ही दिखाई पड़े, यह अभ्यास हम अभी से करते रहें। इसके लिए बेहद ड्रामा के ज्ञान को अच्छी तरह से समझें और भगवान से सच्चे सम्बन्ध का अनुभव करें, उनकी श्रीमत प्रमाण चलें। ❖

## कहते जिसे मधुबन

**ब्रह्माकुमार योगेश, ग्वालियर**

आबू की सुरम्य वादियों में, खिल उठा चमन।
प्रेम ही प्रेम बरसता जहाँ, कहते जिसे मधुबन।।

विकारों से तपते हृदयों को, मिलता चैनो अमन।
चैतन्य फूलों से सजा, कितना प्यारा उपवन।।

प्रभु के प्यार में डूबा, मस्ती भरा हर मन।
ज्ञान-योग की शीतल फुहारों से खिल उठा तन-मन।।

भारत माताओं की सेना जहाँ भरती है प्रभु स्पंदन।
इसको देख समझ में आता होता क्या है जीवन।।

जो भी एक बार आ जाये, सफल होते इक्कीस जन्म।
प्रभु ने इसे बनाया ऐसा, कोटि-कोटि अभिनन्दन।।

अनुभव ऐसा होता है जैसे महक रहा हो चन्दन।
कमल की पंखुड़ियों जैसा लगता यहाँ का चिलमन।।

परोपकार यह बाबा का, कैसे करें हम वन्दन।
प्रेम ही प्रेम बरसता जहाँ, कहते जिसे मधुबन।।

# कहनी है इक बात हमें – अपने साथी युवकों से

● ब्रह्माकुमार सूर्य, आबू पर्वत

युवाकाल मनुष्य जीवन का स्वर्णकाल है। इस काल में मनुष्य के अन्दर बुद्धि, बल, ओज व तेज सब होता है। इसमें ही वह अपने भविष्य के भाग्य का निर्माण करता है। इसी काल में वह अपनी शिक्षा सम्बन्धी योग्यताओं को भी पूर्ण करता है। इसी समय वह स्वयं में विभिन्न कलाओं का भी विकास करता है और अपना मार्ग भी चुनता है। इसी अवधि में उसे यथार्थ मार्गदर्शन की भी आवश्यकता होती है। इसी काल में नरेन्द्र स्वामी विवेकानन्द बने और मूलशंकर बने स्वामी दयानन्द सरस्वती।

परन्तु यदि इस स्वर्णकाल में युवक भटक जाएँ तो उनका यह काल काँटों का काल बन जाता है। इसमें कुछ अच्छा सीखना है, स्वयं को सीखने के लिए तैयार करना है। ज़रूरी नहीं है कि जिसे आप अच्छा समझते हों, वही अच्छा हो। जो विचार आपके हों, वही श्रेष्ठ हों। उनमें त्रुटि भी हो सकती है अत: आप अपनी गलतियों को सुधारने के लिए तत्पर रहें।

आज अनेक लोग पाप को ही पुण्य व गलत राह को ही सच्ची राह मान रहे हैं। और ऐसे युवक स्वयं को बड़े ही बुद्धिमान भी समझ रहे हैं। परन्तु याद रखें, जो कर्म आपकी एकाग्रता को नष्ट करे व जो राह आपकी पवित्रता को भंग करे, उसे सत्य मानना अज्ञानता के अन्धकार में डूबना है। युवक कहीं भी, किसी के भी लगाव में फँस जाते हैं, वायदे कर लेते हैं, भावुक हो जाते हैं, अमर्यादित कर्म कर लेते हैं और जीवन भर के लिए पश्चाताप का मार्ग निर्माण कर लेते हैं। ऐसे अनेक युवक उदासी व निराशा की चादर ओढ़कर हमारे पास आते हैं। वे कहते हैं कि जिन्हें हमने अपना समझा, दिल दे दिया, उनसे हमें धोखा मिला, उनकी स्थिति अति दयनीय होती है।

सभी युवक याद रखें 'मन की शक्ति' ही सबसे बड़ी शक्ति है। यदि आपने मन को भटका दिया या व्यर्थ विचारों में लटका दिया या केवल इन्टरनेट में अटका दिया तो आपकी सफलता का मार्ग अवरुद्ध हो जाएगा। वे युवक जो जीवन में कुछ कर दिखाना चाहते हैं, कुछ बनना चाहते हैं, माँ-बाप की कामनाओं पर खरे उतरना चाहते हैं, सफलता की ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं, अपने मन के भटकाव को रोकें।

यदि आपने अपने मन को सही दिशा दे दी, कुसंग को पहचान गये, अपने साथियों की कामुकता से मुक्त रहे तो आप वो सब कुछ कर पायेंगे, जो आप करना चाहते हैं। आपकी गरीबी या अन्य कोई बड़े से बड़ा व्यवधान भी आपको रोक नहीं पायेगा।

ध्यान दें, मन जितना शान्त होगा, बुद्धि की कुशाग्रता उतनी ही बढ़ेगी। मन यदि भटकता रहा तो तीव्र बुद्धि भी मंद पड़ जाएगी। बुद्धि का पैमाना केवल परीक्षा के अंक ही नहीं होते, कोई अनपढ़ व्यक्ति भी बुद्धिमान हो सकता है। सेकण्ड क्लास विद्यार्थी भी फर्स्ट क्लास इंजीनियर बन सकता है। अपनी बुद्धि को सही दिशा प्रदान करें। मन और बुद्धि के इस सम्बन्ध को जानकर अपनी बुद्धि का विकास करें। जो युवक राजयोगी हैं, वे इसकी यथार्थ विधि के द्वारा अपनी बुद्धि के स्तर का विकास करें।

अब से लगभग 120 वर्ष पूर्व युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द ने मद्रास में ऐसे 100 युवकों का आह्वान किया था जो ब्रह्मचर्य के तप से सोना बनकर भारत को नई दिशा दे सकें। परन्तु उनका स्वप्न अपूर्ण ही रह गया। अब स्वयं भगवान आप सभी युवकों का आह्वान कर रहे हैं। उन्हें युग बदलना है। उन्हें आपकी पवित्रता की शक्ति से प्रकृति को पावन करना है, उन्हें आपके योगबल से इस धरा को पाप-मुक्त बनाना है। तो स्वीकार करो

भगवान का आह्वान...

प्यारे युवको! आप क्या पसंद करेंगे? कलियुगी वासनाओं के गंदे नाले में बह जाना या ज्ञान की निर्मल गंगा में स्नान करना? कलियुगी राह में अन्धकार व्याप्त है और ईश्वरीय राह में आलोक ही आलोक है।

हे विवेकवान युवको ! तुम्हारा जन्म इन्टरनेट पर गन्दगी में जाने के लिए नहीं है। विज्ञान के ये साधन सुखकारी भी हैं तो अति विनाशकारी भी हैं। अपना मार्ग तुम्हें स्वयं चुनना है। अपने कल्याण का मार्ग चुनो। यदि आप कहीं जा रहे हो और गन्दगी का ढेर पड़ा हो तो क्या आप वहाँ रुककर उसका निरीक्षण करेंगे या उसकी ओर देखेंगे भी नहीं ? नेट पर अच्छाई भी है परन्तु गन्दगी का भण्डार भी है। आप उसे खोलकर अपने चित्त में गंदगी क्यों भरते हो? यदि आप ऐसा करने को विवश हैं तो यह मृत्यु का मार्ग है। यह मृत्यु, जीते जी मृत्यु है।

दो युवकों की सच्ची कहानी सुनिये। दोनों कॉलेज में प्रवक्ता। दोनों के पास चार-चार डिग्रियाँ। मेरे पास समस्या लेकर आये कि पढ़ाते-पढ़ाते हमारा ब्रेन अचानक ब्लॉक हो जाता है। कुछ भी याद नहीं रहता और स्थिति बड़ी ही दयनीय हो जाती है। वे पूछ रहे थे कि हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? पूछताछ करने पर पता चला कि वे रात को 10.00 बजे इन्टरनेट खोल लेते हैं और एक बजे तब गंदी फिल्में देखते हैं। परिणाम स्वरूप नींद भी तामसिक होती है। सोकर उठने पर न तन फ्रेश, न मन। ब्रेन ब्लॉक होता जाता है।

यदि आप इन्टरनेट पर गन्दगी देखते हैं तो आपके ब्रेन में गन्दी एनर्जी एक्टिव हो जाती है और यह बाहर की गन्दी एनर्जी को आकर्षित करती है। इससे ब्रेन ब्लॉक होता है और थोड़े ही समय में मन के रोगों का प्रकोप हो जाता है व जीवन पतन के गर्त में चला जाता है। ऐसा आज लाखों युवकों के साथ हो रहा है जिनके लिए इन्टरनेट, मोबाइल फोन व टी.वी. श्राप बनकर आये हैं। माँ-बाप भी ऐसे युवकों के भविष्य को लेकर चिन्तित हैं।

एक हायर स्टडी करने वाली लड़की ने पूछा - मैं घण्टों पढ़ती हूँ परन्तु कुछ भी याद नहीं रहता, परीक्षा निकट है, मैं क्या करूँ? फिर रोने लगी। मैंने पूछा, आपका व इन्टरनेट का कैसा नाता है? बोली, मैंने नेट पर बहुत फिल्में देखी हैं परन्तु अब नेट खोलना बन्द कर दिया है पर मन में वही दृश्य आते रहते हैं, एकाग्रता होती ही नहीं। परीक्षा में क्या होगा, मुझे डर लग रहा है। मैं अपने पापा को कैसे मुँह दिखाऊंगी। यह लड़की एम.टेक. की विद्यार्थी है। यह उदाहरण हमने एक का दिया परन्तु रोज यही फोन आते हैं।

देखिये, अल्पकालीन तृप्ति हेतु कितना बड़ा नुकसान ! कैरियर का प्रश्न !! भविष्य अंधकारमय !!! ऐसे युवक जब राजयोग के मार्ग पर आते हैं, तब भी उन्हें एकाग्रता के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है। परन्तु राजयोग के बल से मन की दूषित वृत्तियों को स्वच्छ किया जा सकता है। इसलिए युवक बचें इस महामाया से। युवक जान लें कि मन में ये गन्दगी भर लेने से भविष्य में न आप गृहस्थ जीवन ठीक निभा पाएँगे और न स्वस्थ शरीर रख पाएँगे। मन के रोग, तन के रोगों को विकराल कर देंगे।

हे भावी कर्णधारो ! इस धरा पर अब विकराल काल आने वाला है। हम युग-परिवर्तन के अति समीप हैं। अबकी आपकी श्रेष्ठ स्थिति तब अति सहायक सिद्ध होगी। इसलिए अब दैहिक प्रेम में स्वयं को नष्ट न करो। जन्म-जन्म तुमने दैहिक नातों के प्यार को देख लिया। वहाँ तुम्हें सुख कम, दुख ज्यादा मिला। तुम्हारा मन उलझ गया, भटक गया। अब भगवान से प्रीत जोड़ो, इस प्रीत में परम आनन्द है। तब तुम सारे संसार को प्यार बाँट सकोगे।

अब विषय-वासनाओं के पीछे न भागो। इनका भोग तुम्हें कभी भी तृप्त नहीं करेगा। एक युवक ने इस मान्यता के आधार पर कि अति के बाद अन्त हो जाएगा, विकारों का अति भोग किया पर अन्त नहीं हुआ, तृष्णा बढ़ती गई । अब न लौकिक के काम का रहा, न अलौकिक के काम का।

सब शक्तियाँ नष्ट कर डालीं। अब उदास चेहरा लिये सबके पास समाधान हेतु भटकता है। विश्व के मनोवैज्ञानिकों ने संसार को गलत राह दी। वासनाओं को नष्ट करने का नहीं, तृप्त करने का सन्देश दिया और सम्पूर्ण पाश्चात्य सभ्यता काम-वासना के गन्दे नाले में बहने लगी और आप विश्वास कर लें, ये वासना-प्रधान सभ्यता अब अपना व दूसरों का विनाश करेगी।

यदि आप योग-मार्ग के राही हैं तो अब वही करो जिसके लिए आपने ये पवित्रता का मार्ग चुना है। दुविधा में जीवन न बिताओ। यहाँ भी चलना कठिन व वहाँ भी जाना कठिन। नहीं, अब ईश्वरीय पथ ही सर्वश्रेष्ठ है। एक बार जब इस पावन पथ पर चल पड़े तो पीछे मुड़कर न देखना। एक बार भगवान का हाथ पकड़ लिया, अब उसे छोड़ने की भूल न करना। यदि तुमने उसे छोड़ दिया तो कोई भी तुम्हें सहारा नहीं देगा।

योग-साधना से इस पवित्रता के मार्ग को सरल करो। इस पथ पर चलकर अपने जीवन को सफल करो। कभी न भूलना कि योग-साधना के बिना पवित्रता का आनन्द नहीं लिया जा सकता। योग-अग्नि से ही वासनाएँ शान्त होंगी व अंग-अंग शीतल होंगे। यदि इस मार्ग पर चलकर योग-साधना नहीं करोगे तो ये मार्ग तुम्हें संघर्ष भरा लगेगा। उठो, पवित्रता की सुगन्ध चारों ओर फैलाओ। इस सुगन्ध से वसुन्धरा से विकारों की बदबू नष्ट हो जाएगी। तुम तो मास्टर ज्ञान सूर्य हो, तुम्हारे प्रकाश से प्रत्येक मन का अन्धकार दूर हो जाएगा। तुम व्यर्थ की इच्छाओं की मृगतृष्णा में कभी न भटकना।

हे राजयोगी महावीरो ! तुम पर भगवान की नज़र है, वह तुम्हें शक्ति दे रहा है, वह तुम्हारा शृंगार कर रहा है। तुम्हें ज्ञात रहे, अब समय योगियों का आ रहा है। श्रेष्ठ योगी आत्माएँ इस धरा पर पूर्णिमा के चाँद की तरह चमकेंगी। इसलिए तुम महान योगी बनो। प्रतिदिन अमृतवेले परम सद्गुरु तुम्हें वरदान देता है, ले लिया करो। सारा संसार सो रहा है, तुम जगे हो, अब स्वयं को श्रेष्ठ स्वमान से जागृत रखो।

यदि आप विद्यार्थी हैं तो प्रतिदिन सवेरे व पढ़ने से पूर्व ये अभ्यास करें - मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ, मन, बुद्धि का मालिक हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। फिर मन-बुद्धि को आदेश देना कि हे मेरे मन, अब शान्त हो, एकाग्र हो जा। हे मेरी बुद्धि, तू मेरी मित्र है, मैं अब जो भी पढ़ूँ, तू उसे याद कर लेना व परीक्षा के समय उसे स्मरण करा देना। हर पीरियड के प्रारम्भ में या मुरली सुनते भी यह अभ्यास किया जा सकता है। आप देखेंगे कि धीरे-धीरे मन व बुद्धि आपके आदेश का पालन करेंगे।

यदि आपको इन्टरव्यू देना है, परीक्षा देनी है या अपेक्षित अंक लाने हैं तो जब भी आप उठें, उठते ही 21 बार स्मरण करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। फिर वह संकल्प करना जो आप चाहते हैं। जैसे मेरा सलेक्शन निश्चित है या मेरे इतने नम्बर आयेंगे। ऐसा करने से आपको सदा ही सफलता मिलेगी।

महान युवको! इस जीवन की सफलता इसी में है कि यह अब भगवान के काम आ जाए और आने वाले समय में इस संसार के काम आ जाए। तुम्हें ऐसी तपस्या करनी है। याद रखना, बिना तपस्या के समस्या हल नहीं होगी। इस मार्ग में सफल होने के लिए अपने स्वभाव को सरल बनाओ और अपने विचारों को महान बनाओ।

उठो साथियो! अलबेलेपन की नींद को नष्ट कर दो। संसार तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है, समय भी तुम्हारी राह देख रहा है। तुम महान हो, पुण्यात्मा हो, देवात्मा हो। अब स्मृति स्वरूप बन जाओ। याद रखो, तुम्हारे पास शक्ति है हर संकल्प को पूर्ण करने की । तुम अपने को बस योग्य बनाओ। तुम्हारी योग्यताओं को बाबा इस महान कार्य में अवश्य प्रयोग करेगा। कभी न भूलना कि आगे बढ़ने वालों को कोई रोक नहीं सकता।

❖

# मनमानी और बुद्धिमानी

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

जब कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करता है जिसके परिणाम स्वरूप कइयों को सुख मिलता है तो उसे बुद्धिमानी वाला कार्य कहा जाता है। बुद्धिमानी शब्द का सन्धिछेद करें तो दो शब्द सामने आते हैं, बुद्धि+मानी जिसका अर्थ है बुद्धि की (बात) मानी। इसकी भेंट में एक दूसरा शब्द है मनमानी (मन+मानी) जिसका अर्थ है मन की (बात) मानी। मनमानी करने वाले को रोका जाता है और बुद्धिमानी दिखाने वाले को सराहा जाता है।

### कर्म रूपी प्रयोगशाला द्वारा मन, बुद्धि का परीक्षण

प्रश्न उठता है कि मन क्या है और बुद्धि क्या है? ये कैसे कार्य करते हैं? ये कहाँ हैं? वास्तव में मन, बुद्धि और संस्कार चेतन आत्मा की ही शक्तियाँ हैं। जैसे किसी फल में विटामिन, आयरन, कार्बोहाइड्रेट्स आदि पोषक तत्व घुले-मिले रहते हैं, हम फल के किसी एक हिस्से में एक पोषक तत्व और दूसरे हिस्से में दूसरे पोषक तत्व के होने का दावा नहीं कर सकते। सूक्ष्म प्रयोगशाला में जाकर सूक्ष्म परीक्षण द्वारा ही इनकी मात्रा का ज्ञान हो सकता है। इसी प्रकार कर्म रूपी प्रयोगशाला में उतर कर, सूक्ष्म आन्तरिक जांच द्वारा ही जाना जा सकता है कि कौन-सा संकल्प मन ने उठाया, कौन-सा बुद्धि ने और कौन-सा संस्कारों प्रमाण उठा।

### मन, बुद्धि, संस्कार द्वारा त्वरित कार्य

मान लीजिए, हम एक सुनसान रास्ते पर जा रहे हैं, रास्ते में काला भयंकर सर्प फुफकार रहा है, उसे देखते ही एकदम से भय का संकल्प उठेगा। यह मन है जो स्थिति को देखते ही, उसके प्रभाव में आकर तुरन्त प्रतिक्रिया करता है। भयभीत मन को बुद्धि समझाती है कि डरने से कुछ नहीं होगा, लौट चलो या दूसरे रास्ते से आगे बढ़ो, इसके दाएं-बाएं खिसकने का इन्तजार करो, पर इसे छेड़ना नहीं। छेड़ना, चिल्लाना, पत्थर फेंकना घातक हो सकता है। अब भय के संकल्पों का स्थान बचने का उपाय करने के संकल्प ले लेते हैं। इस स्थिति में संस्कार अर्थात् हमारे पूर्व में किए गए अनुभव भी हमें मदद करते हैं। मान लीजिए, कुछ वर्ष पहले ऐसा ही मेरे भाई के साथ हुआ था तब उसने पेड़ पर चढ़कर जान बचाई थी तो वह स्मृति हमें भी पेड़ पर चढ़ने को प्रोत्साहित करेगी। इस प्रकार हमारे मन, बुद्धि, संस्कार तीनों ही बहुत त्वरित अर्थात् एक सेकण्ड भर में कार्य कर लेते हैं जिसे बहुत ही अन्तर्मुखी होकर जाना, समझा जा सकता है।

### पहले वो करो जो वश में है

विद्यालय में परीक्षा के दौरान हम बच्चों को सफलता का यह सूत्र समझाते हैं कि पहले वो सवाल हल करना जो आपको आते हों, आपकी पहुँच में हों। यदि ना समझ में आने वाले प्रश्नों के सोच-विचार में आप उलझ गए तो जो आते हैं, उन्हें हल करने का समय भी चला जाएगा। इसलिए मुश्किल लगने वाली बातों को किनारे कर पहले सहज बातों का समाधान करो। जीवन भी नित्य नए पाठ सिखाने वाली पाठशाला है। यहाँ नित्य नई-नई परीक्षाएँ नए-नए वस्त्र धारण कर सामने आती हैं। उन्हें हल करने का सरल फार्मूला भी यही है कि पहले वो करो जो आपके वश में है। आपकी पहुँच में है। शरीर को चलाने वाली आत्मा राजा से आँख की दूरी मात्र दो अंगुल है। आँख से दिखने वाली चीज़ें सब की सब दो अंगुल से ज्यादा दूरी पर हैं पर आँख करीब से करीब है। जीवन का सही फार्मूला यह है कि हम अन्य किसी दूर की वस्तु या व्यक्ति पर नियन्त्रण करने से पहले अपनी आँख पर नियन्त्रण रखें। इससे क्या देखना है, कितना देखना है, कब देखना है, इसमें बुद्धिमानी से काम लें। यदि आँख पर नियन्त्रण न रख, इससे दिखने वाली वस्तुओं तथा व्यक्तियों पर नियन्त्रण करने की कोशिश की तो यह मनमानी होगी क्योंकि हमारा हक केवल हमारी आँखों पर है, दुनिया के दृश्यों और दृश्यमानों पर नहीं।

### नियन्त्रण रखें कान और मुख पर

इसी प्रकार आत्मा से कान की दूरी मात्र चार अंगुल है। अच्छा हो कि इस समीप की इन्द्री का भी हम बुद्धिमानी के साथ प्रयोग करें, इससे सुनी जाने वाली आवाज़ें तो दूसरों की हैं, उन आवाज़ों पर हमारा कोई नियन्त्रण नहीं पर अपने कानों पर तो है। इनसे क्या सुनना है, कब सुनना है, कितना सुनना है, क्या नहीं सुनना, बुद्धि द्वारा यह सही निर्णय हमें लेना है। इसी आत्मा से चार अंगुल की दूरी पर ही मुख है। मुख द्वारा खाया गया अन्दर जाता है और बोला हुआ बाहर जाता है। अन्दर क्या और कितना भेजना है और बोल द्वारा बाहर क्या और कितना निकालना है, ताकि अन्दर और बाहर शान्ति बनी रहे, यह उचित निर्णय भी बुद्धि लेती है। यदि मनमानी करेंगे तो अन्दर भी अशान्ति मचेगी और बाह्य जगत में भी शान्ति भंग होगी। हमारे वश में केवल हमारा मुख है, दूसरे का मुख तो बहुत दूरी पर है। कई बार हम दूसरों का मुख बन्द करने की बात सोचते हैं पर अपने वाले को खुला छोड़ देते हैं। इस अनहोनी में वह कई अनचाही चीज़ें गटक जाता है और कई अनचाही चीज़ें उगल देता है। कल्याण इसी में है कि हम संसार के पदार्थों और संसार की बातों पर अंकुश लगाने की नाकामयाब कोशिश छोड़कर अपने मुख को वश में रखें।

### अदला-बदली ना करें

इसी प्रकार हाथ भी बहुत समीप की कर्मेन्द्रिय हैं। इनके सदुपयोग या दुरुपयोग के हम ज़िम्मेवार हैं, दूसरे के हाथ तो बहुत दूर हैं, उन पर हमारी पकड़ कैसे होगी। दूसरा व्यक्ति अपने हाथों से मार, काट, हिंसा, चोरी कर रहा है, तो खून से उसके हाथ रंग रहे हैं, हमें अपने हाथ बचाकर रखने हैं ताकि उन पर कोई धब्बा ना लगे। दूसरे के प्रति शुभभावना है कि ईश्वर इसे सद्बुद्धि दे ताकि यह मनमानी ना करे। परन्तु उसके कर्मों का बार-बार चिन्तन करना ऐसा ही है मानो हमने अपने स्वच्छ हाथ उतार कर रख दिए और उसके पाप सने हाथ खुद को लगा लिए। ऐसी अदला-बदली ना करें। अपना काम अपने हाथों से चलाएँ, उनको साफ रखें और उस सफाई को देख हर्षित हों।

### दसवाँ द्वार है मुक्ति-द्वार

ऐसा आत्म-नियन्त्रण तब आता है जब हम आत्मा के भान में रहते हैं। आत्मा का सिंहासन भ्रकुटि है। इसी स्थान को अकाल तख्त भी कहा जाता है। यही स्थान दसवाँ द्वार भी कहलाता है। शरीर के अन्य नौ द्वार बन्धन-द्वार और यह दसवाँ द्वार मुक्ति-द्वार माना जाता है। यदि मानव की चेतना उन नौ दरवाजों में से किसी के भी चिन्तन, स्मरण, मोह में अटकी है तो बंधन महसूस करती है परन्तु यदि उनसे ऊपर उठकर भ्रकुटि सिंहासन में स्वयं को विराजमान महसूस करती है तो शरीर में रहते भी निर्बन्धन, निश्चिन्त और साक्षी स्थिति का अनुभव करती है। जैसे सूर्य आसमान में रहकर पूरे जगत को रोशनी देता है इसी प्रकार आत्मा भी भ्रकुटि में विराजमान रहकर सारे शरीर को रोशन करती है।

### दिव्य बुद्धि ही दिखाती है बुद्धिमानी

आत्मा का कोई बाहरी शत्रु नहीं है पर यह अपना मित्र और शत्रु स्वयं ही है। आत्मा जैसे ही शरीर धारण करती है, इन्द्रियों के माध्यम से शरीर के जगत (प्रकृति के जगत) से जुड़ जाती है। वह जो कुछ देखती, सुनती, खाती है उसी अनुसार उसका विचार चलता है। यदि यह विचार श्रेष्ठ है तो आत्मा अपना मित्र है और यदि यह विचार गलत है तो आत्मा अपना शत्रु है। इसीलिए बापू के तीन बन्दरों का उदाहरण दिया जाता है कि आँख, मुख, कान को बुराई से बचाकर रखो। इन इन्द्रियों को केवल आवश्यकता के समय प्रयोग करके फिर इन्हें सिकोड़ लो अर्थात् इनसे न्यारे हो जाओ और पिता परमात्मा के रूप, गुण, कर्तव्य का चिन्तन करो। इससे बुद्धि दिव्य बनती जाती है। ऐसी दिव्य बुद्धि ही बुद्धिमानी दिखा सकती है और मन को मनमानी से बचा सकती है। ❖

# नये घुटने, नया अनुभव

● ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क, दिल्ली

'शरीरं आद्यं खलु धर्म साधनम्' अर्थात् पुण्य कर्म करने का प्रथम माध्यम तो शरीर ही है। यह बहुत प्रसिद्ध उक्ति है। यह भी कहा जाता है कि जान है तो जहान है अन्यथा जहान (संसार) होते हुए भी जान (आत्मा) उसका आनन्द नहीं ले सकती। पर मानव सचेत तभी होता है जब जान पर बन आती है।

कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ। मुझ आत्मा की मोटर के दोनों पहिये (घुटने) खिटखिट करते रहे। कुछ-कुछ रिपेयरिंग चलती रही, जहान में सेवार्थ दौड़ते रहे और एक दिन जान पर बन आई। बिदके घोड़े की तरह घुटने बगावत कर बैठे और लगा कि जहान लुट गया। फिर भी सेन्टर की सेवाओं को देखते हुए दो मास जाम घुटनों से ही जान अटकाये रखी।

डॉक्टर ने तुरंत ऑप्रेशन का इमरजेन्सी अलर्ट कर दिया। कमाऊ पूत होने के बावजूद धन कभी जमा किया ही नहीं था, मेडिकल क्लेम का कभी सोचा भी नहीं। ऑप्रेशन में चाहिएँ पाँच लाख। सभी के मन में था कि ब्रह्माकुमारी संस्था को जीवन समर्पित किया है, संस्था ही खर्च करे।

मेरी सोच में था कि संस्था पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। भवन बनाये हैं तो लाभ आत्मायें ले रही हैं। जीवन समर्पण किया है तो अपने कल्याण के लिए, किसी पर अहसान नहीं किया। यज्ञ तो सहयोग से ही चलता है। खैर! इसी ऊहापोह में मैंने राखी का उत्सव भी मना लिया। श्रद्धेय दादी जी दिल्ली पधारी हुई थीं। चल न पाने के कारण मैंने साथी बहन के हाथ आदरणीया गुलजार दादी जी को राखी भेजी।

अचंभा तो तब लगा जब मेरे घुटनों के ऑप्रेशन का पता चलते ही आदरणीया दादी जी ने दिव्य राखी, ढेर-सी दुआयें और सहयोग भेजा।

वाह रे! दादी जी का ममतामय हृदय! तत्पश्चात् तो सहयोग की लहर फैल गई। सभी ने यथाशक्ति किया। उसी दिन ज्ञानामृत पत्रिका में ग्लोबल हॉस्पिटल में घुटनों की शल्य चिकित्सा का समाचार पढ़ा। साथी बहन ने तुरंत फोन किया। फोन पर ही बुकिंग भी हो गई। खर्च का पूछा तो डॉक्टर मुरलीधर का उत्तर था, 'नोमीनल चार्जेज, आप आ जाइये बस।' टिकट बुक हो गया। हम 'गरीब रथ' से रात साढ़े नौ बजे आबू स्टेशन पहुंचे। ग्लोबल की गाड़ी हमें लेने स्टेशन पहुँची हुई थी। रात्रि ग्यारह बजे भी सभी मुस्तैद खड़े मिले।

मैं इतनी मनी कांशस (आर्थिक चिन्तन में) थी कि रूम में पहुँचते ही पहले बिल पूछा। जवाब मिला, कल बतायेंगे। अगले दो दिन कई तरह की जाँच चलती रहीं। हर बार मैं बिल माँगती रही और प्रत्युत्तर मिला, आप निश्चिन्त रहें, डॉ.प्रताप बतायेंगे, आप अपना इलाज करायें..। मैं आश्चर्यचकित टुकुर-टुकुर देखती हुई चुप रही। खिड़की से ग्लोबल अस्पताल की सुन्दरता का आनन्द लेती रही।

चारों ओर अरावली पर्वत की मुँह बोलती वादियाँ..हरे-भरे पेड़ों की जोर से झूमती डालियाँ, झुक-झुक हँस-हँसकर अपनी ओर इशारा करके बुलाते रंग-बिरंगे पुष्प गुच्छ, झर-झर बहते कल-कल करते झरनों का संगीत...! अस्पताल के अंदर भी साथ-साथ चलती दोनों तरफ अगवानी करती क्यारियाँ! चलते-चलते अकस्मात् रोक लेते, प्रकृति को भी मात करते झर-झर बहते विद्युत चित्र! वाह! क्या स्वर्गिक नज़ारा है! हठात् अपनी ओर इंगित करती प्रकाश किरणें! रूम में भी किसने बिखेरी शान्ति! चटक चांदनी-सी बोलती खुशियाँ...! यह क्या सामने टीवी में स्वागत करता 'पीस ऑफ माइंड टीवी चैनल'! मेरा कवि मन झूम उठा।

खिड़की से बाहर झांका तो आकाश के बादल ढेर से फॉग (कुहरे)

का उपहार भीतर छिटक गये। यह अस्पताल है या पिकनिक स्थल है! मैं ऑप्रेशन कराना भी भूल गई।

प्रात: उठते ही सामने अव्यक्त बापदादा के आत्माओं से मिलन मनाते नज़र नवाज़ नज़ारे! आदरणीया जानकी दादी जी के मुखारविन्द द्वारा उच्चारे गये ईश्वरीय महावाक्य, लगा जैसे कि आध्यात्मिक कक्षा हमारे पास स्वयं चलकर आ गई है। फ्रेश होने से पूर्व ही चाय का आना, मिनट-मिनट जाँच करने आती मुसकराती हँसनियाँ-सी नर्सेज, अभूतपूर्व स्वच्छता! भूख लगने से पहले ही मधुबन (पांडव भवन) से बनकर आये ब्रह्मा भोजन का मिल जाना! मेडिकल स्टाफ का स्नेहमय व्यवहार! अस्पताल के स्टाफ द्वारा हर्षप्रद आगाज़! कितनी अप्रत्याशित-सी सहजता! खर्च के बिल का तो कहीं जिक्र ही नहीं। शायद मेरे समर्पणमय जीवन के कारण सबने डॉ.प्रताप पर सब छोड़ रखा था। और वो थे कि चुप्पी साधे हुए थे।

आखिर वो दिन आया। मेरे दोनों घुटनों का सफल ऑप्रेशन डॉ.खण्डेलवाल ने किया। डॉ.खण्डेलवाल के हाथ में शफा है। सैकड़ों ऑप्रेशन उन्होंने किये हैं, सभी सफल रहे हैं। ओ.टी. में भी वही शांत वातावरण..तीनों लोक एकाकार..! उधर पानी की तरह खर्च! इस अद्वितीय पालना के हिंडोले में झूलता मन साइलेन्स में साइंस का भी थैंक्स करता हुआ अस्पताल को सहयोग देने के लिए उमड़ने लगा। जो सहयोग मुझे मिला था, उसका ऋण तो कई जन्म नहीं चुका सकती परंतु कुछ करके मैं हल्की हो गई। नये घुटने पाकर नया जहान पा लिया है। जान में जान आ गई है। कितना न थैंक्स करूँ, अब मैं खूब अच्छी तरह चलती हूँ। डॉ.खण्डेलवाल अति नम्रचित्त, निरहंकारी हैं। मुझे विशेष मिलने का अवसर दिया। बड़े प्यार से मिले।

हे आत्माओ! सर्वे भवन्तु सुखिन:... पर जब भी आवश्यकता पड़े ग्लोबल अस्पताल की सेवायें लेना। और कहीं बाहर के बदले यहाँ सेवायें देना-लेना अपना पद्मगुणा भाग्य जमा करना है। ऐसी मेरी निष्पक्ष धारणा है। मेरा स्वर्णिम अनुभव स्वर्गिक है। ❖

## जेल बनी आश्रम

**राजाराम, जिला जेल, कुरुक्षेत्र**

**ख**राब आदतों के कारण मेरा लौकिक जीवन विषय, विकारों, अवगुणों से ग्रस्त था। माँस-मदिरा-बीड़ी-सिगरेट-तंबाकू आदि सभी प्रकार के दुर्गुण मुझ में व्याप्त थे। इन्हीं अवगुणों के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की जेल में कैद हो गया। मुकदमा लग गया और सजा पड़ गई। कुरुक्षेत्र जिला जेल (हरियाणा) में पहुँचा तो पिछली गलतियों व बर्बादी का एहसास करके बहुत विचलित व परेशान रहने लगा। जेल में एक दिन मैंने ओम शान्ति की चर्चा सुनी। निमित्त बहन जी ने मुझे सात दिन का कोर्स कराया। नियमित वहाँ जाने लगा तो धीरे-धीरे नशे की आदत छूट गई और ईश्वरीय ज्ञान से जीवन जीने के तरीके में परिवर्तन होने लगा। आत्मा और परमात्मा का ज्ञान मिलने से विकार और दुर्गुण समाप्त होने लगे। अब मैं बाबा की श्रीमत पर चलते हुए अपने आपको बहुत हल्का महसूस करने लगा हूँ। बाबा का ज्ञान मुझे बहुत अच्छा लगा। पिछले 9 मास से प्रतिदिन बाबा की मुरली सुनता हूँ, एक दिन भी मुरली नहीं छूटती। अब मुझे शिवबाबा का सत्य ज्ञान प्राप्त हो चुका है। मैं बहुत शुक्रगुजार हूँ मीठे बाबा का। प्यारे बाबा, आपने मेरा तीसरा नेत्र खोल दिया और सृष्टि-चक्र का ज्ञान देकर धन्य-धन्य कर दिया। मैं बहुत भाग्यवान हूँ, जो भगवान की गोद का बच्चा बना हूँ। सत्य बाप के रूप में भगवान मेरी पालना कर रहे हैं, सत्य टीचर के रूप में मुझे सत्य गीता ज्ञान सुना रहे हैं। सतगुरु के रूप में जीवन रूपी नैया को पार लगा रहे हैं। ❖

# भगवान आ चुके हैं

● ब्रह्माकुमारी आशा, आजमगढ़ (उ.प्र.)

सन् 2007 में पति का देहान्त हो जाने से मैं काफी परेशान थी। दोनों बच्चों की पालना का भार मुझ अकेली पर आ गया था। सन् 2009 में अचानक किसी ने एक पर्चा देते हुए उसमें लिखे स्थान पर जाने का इशारा दिया। पर्चा पढ़कर विचित्र अनुभव हुआ क्योंकि उसमें लिखा था,'भगवान आ चुके हैं।' साथ ही उसमें परमात्मा शिव से सम्बंधित कई जानकारीपूर्ण बातें लिखी थीं किंतु मुझे इस बात ने हिला दिया कि भगवान आ चुके हैं।

### किसी के साथ-साथ चलने का अहसास

उस समय मैं घर से कम ही बाहर निकलती थी। मैंने ससुरजी को पर्चा देते हुए लिखित स्थान का पता लगाने को कहा। मेरे बुजुर्ग ससुर, 'बहू की तकलीफें शायद इससे दूर होंगी', यह सोचकर साइकिल लेकर ढूँढ़ने निकल पड़े। अच्छी बात तो यह रही कि पर्चे पर छपाई वालों का पता था। छपाई वालों के यहाँ पहुँचकर सेवाकेन्द्र का पता प्राप्त करके घर लौटे और पर्चा लौटाते हुए सेवाकेन्द्र का पता मुझे समझा दिया। मैंने भी देर नहीं की, दूसरे ही दिन हाथ में पर्चा लेकर निकल पड़ी। अकेलेपन का आभास हो रहा था परन्तु आश्चर्य तब हुआ जब ऐसा लगा मानो कोई मेरे साथ चल रहा हो और मैं बड़े आराम से ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर पहुँच गयी। वहाँ मेरी मुलाकात निमित्त बहनजी से हुई। उन्होंने मुझे बिठाया और मेरा परिचय पूछने लगी। उनके पूछने में इतना अपनापन था कि मैं बताते-बताते भावुक हो उठी और दबे हुए अश्रु छलकने लगे।

### पिता के प्यार की भासना

बहनजी ने मुझे एक कमरे में ले जाकर बिठाया और वहाँ रखी बड़ी-सी तस्वीर की ओर इशारा करते हुए कहा, बहन जी, अब आपको जो कुछ कहना हो इनसे कहो, इन्हें ही अपना साथी समझो, अपने को बेसहारा मत समझो, इतना कहकर वो चली गयी। तस्वीर वाले बाबा (पिताश्री ब्रह्मा बाबा के तन में शिव बाबा) को मैं जानती तक नहीं थी किंतु उनके सम्मुख बैठते ही अंदर से पिता के प्यार की भासना आने लगी। मैंने दिल की सारी बातें नम आँखों से कह डालीं। कुछ ही पलों में मैंने खुद को इतना हल्का पाया मानो मेरा बोझ किसी ने ले लिया हो। उसी क्षण निश्चय हो गया कि मेरे दुःखों को दूर करने के लिए ही भगवान धरा पर आया है। कुछ देर बाद बहनजी दुबारा आई, मेरा अनुभव पूछा, फिर पूरा साप्ताहिक कोर्स करने की सलाह देकर मुझे घर भेज दिया। रोज़ अपने गांव से 5 कि.मी. की दूरी तय कर कोर्स पूरा करके आज पूरी तरह से बाबा के साथ जुड़ चुकी हूँ और बाबा से अव्यक्त मिलन भी मना चुकी हूँ। पाना था सो पा लिया इस निश्चय से निश्चिंत हो गयी हूँ।

अभी तक के अनुभवों के आधार पर ईश्वरीय परिवार के सभी भाइयों एवं बहनों से यह अवश्य कहना चाहूँगी कि हर हाल में बाबा और ड्रामा पर सदा विश्वास रखें। उस पर से अपने निश्चय की पकड़ ढीली न होने दें। साथ ही ज्ञानामृत को अवश्य पढ़ते रहें। इसमें ज्ञान के अनुभवों को पढ़कर उत्साह बढ़ता है। निश्चय रखें, बाबा अपने बच्चों के लिए सदा हाजिर है, वह कब, कहां और कैसे मददगार बनता है, यह समझ से परे है। वह जैसे स्वयं गुप्त है, उसके कर्त्तव्य भी गुप्त हैं। इसलिए हर बात में निश्चयबुद्धि बन मुश्किलें बाबा को सौंप निश्चिंत हो जाएं। कोई साथ दे या न दे, बाबा हमारे साथ है, यही निश्चय हमें हर मुश्किल से पार ले जाएगा।❖

# पीछा करता है कर्म फल

● ब्रह्माकुमार महेश्वर, पारलाखमण्डी

एक आत्मा राजा के घर में जन्म लेती है तो एक सेवक के घर में, एक धनवान के घर में जन्म लेती है तो एक गरीब के घर में। एक आत्मा स्वस्थ शरीर में है तो दूसरी रोगी शरीर में। एक आत्मा सात्विक आहार स्वीकार करने वाले परिवार में जन्म लेती है तो एक आत्मा तामसिक आहार स्वीकार करने वाले के घर में। बुद्धिजीवी मानव को यह सोचना चाहिए कि जन्म लेते ही इन आत्माओं को प्राप्त व्यवस्थाओं में इतनी भिन्नता क्यों है? जो लोग हिंसक, स्वार्थी, धोखेबाज, पाखंडी, कपटी, झूठे, धूर्त, ढोंगी और व्यभिचारी हैं, उन सबने अपने ही कर्मों से इन उपाधियों को प्राप्त किया है। इनके इन कर्मों से कितने लोग दुखी हुए हैं। उन सब दुखों का भोग अविनाशी आत्मा को इस शरीर में अथवा अगले शरीर में करना ही होगा। कर्मों के आधार पर ही अगले जन्म का निर्धारण होता है।

**कर्म-फल के तीन उदाहरण –**

जिस तरह हजारों गायों के होते हुए भी बछड़ा अपनी माता को ढूँढ़कर उसी के पास जाता है, उसी तरह पूर्व जन्मों में किया हुआ पाप अथवा पुण्य, कर्त्ता को ढूँढ़ लेता है। पूर्वजन्म में किये हुए पापों को, मानव आत्मा वर्तमान जन्म में कैसे भोगती है, कुछ सत्य उदाहरण रख रहे हैं –

(1) रोम नगर के राज-घराने में जन्मी एक औरत थी। नीरो बादशाह ईसाइयों को भूखे शेरों के बीच छोड़कर मज़ा लेता था। यह महिला भी क्रूरता भरे उस दृश्य से आनन्दित होती थी। इस प्रकार आनन्द लेने के अपराध से उसके लिए अगले जन्म में कष्टों का पहाड़ ही खड़ा हो गया। वह जब छह महीने की बच्ची थी तो पोलियो की शिकार हो गई। रीढ़ की हड्डी टेढ़ी होने से लंगड़ा कर चलने लगी। पच्चीस वर्ष की आयु में वह मुर्गी बेचकर धन कमाने लगी, जिस धन को उसका शराबी पिता खर्च कर देता था। अल्पायु में ही इसने पति को खो दिया। दूसरा पति रोगग्रस्त हो गया, अस्पताल में चिकित्सा पाते समय उसने उपचार करने वाली नर्स से ही शादी कर ली। इस प्रकार एक के बाद एक दुखों का अनुभव करते हुए एक बार यह सीढ़ियों से गिर गई। उसकी रीढ़ की हड्डी बिल्कुल टूट गई। इस प्रकार उसने अपनी जीवन-यात्रा मानसिक चिन्ता तथा शारीरिक वेदना में बिताई। पिछले जन्म में क्रूरता के दृश्य का मज़ा लेने के बदले कितना दुखमय जीवन मिला।

(2) फ्रांस देश की एक महिला गिरिजाघर में संन्यासिनी थी। वह दूसरों के दोषों को सहन नहीं कर पाती थी। गलत कार्य करने वाले को कठोरता से डाँटती थी। उसके नापसंद विषय के बारे में कोई कुछ कहता तो वह बहुत विरोध करती थी। बच्चों के गलत कार्य के लिए उन्हें भी बहुत सज़ा देती थी। वह काफी धर्मग्रंथों का अध्ययन कर ज्ञानार्जन कर चुकी थी फिर भी सहनशीलता का गुण उसने प्राप्त नहीं किया था। उन कर्मों के फलस्वरूप उसे अगले जन्म में यौवन से वृद्धावस्था तक वेदना सहनी पड़ी। यौवनावस्था में बहुत रक्तस्राव के कारण बिस्तर पर पड़ी रहती थी। थोड़ा स्वास्थ्य सुधरने पर शादी की। पति के प्रेम के लिए तड़पती थी लेकिन वह उसे प्यार नहीं करता था। वह दूसरे महायुद्ध के लिए गया। उसकी जुदाई का दुख भूलने के लिए उसने शराब पीने में ही समय बिताया। अंत में वह आधी पागल हो गई। वह इतनी दुर्बल हो गई कि पेंशन की राशि लेते समय हस्ताक्षर भी नहीं कर पाती थी। पिछले जन्म के असहनशील व्यवहार के कारण उसे इस जन्म में असहनीय वेदना सहनी पड़ी।

(3) अमेरिका में एक महिला के आश्रम में पलने वाले भाई-बहन में बहुत द्वेष था। ये दोनों पूर्व जन्म में

स्काटलैण्ड के युद्ध में विरोधी सेनाओं में थे। वहाँ से पैदा हुआ यह द्वेष गुप्त रूप में छोटी आयु में ही बाहर प्रकट होने लगा। इससे समझ में आता है कि संबंधों में और व्यवहार में आने वाली समस्याओं का निवारण करने के लिए जन्म-जन्मांतर के कर्म और संबंध का ज्ञान बहुत सहयोगी है।

उपहास करना, नफरत करना, दूसरों की मान्यताओं की निन्दा वा मजाक करना, दूसरों को तुच्छ भाव से देखना, बिना मतलब विरोध करना आदि व्यवहार किसी संदर्भ में हमें सही लगते होंगे अथवा ज़रूरी लगते होंगे। लेकिन, ये बातें दूसरों के मन को दुखाती हैं तो वह दुख क्रूर होकर पीछे पड़ जाता है। फिर वह कर्म का हिसाब-किताब बन अगले जन्मों में तंग करता है। जो हम बोते हैं, उसी को ही हम पाते हैं। पिछले जन्मों में दूसरों के साथ हमने जो किया, उसी को इस जन्म में हम अपने सामने पाते हैं। अतः इस जन्म में हमें क्या करना है, कैसे करना है, यह हमें ही निर्णय करना है।

# निर्णय आपका

● **ब्रह्माकुमारी प्रीति, लखनऊ**

एक बार एक व्यापारी जंगल से गुजरता हुआ तीर्थ-यात्रा पर जा रहा था। उसका मन संशयग्रस्त था कि पता नहीं ईश्वर है या नहीं। तभी उसने एक घायल लोमड़ी देखी जिसके चारों पैर कटे हुए थे। व्यापारी को लोमड़ी पर बड़ी दया आयी और साथ ही यह विचार भी आया कि यदि ईश्वर होते तो इस बेचारी लोमड़ी की यह दशा क्यों होती? तभी मुँह में खरगोश दबाये एक शेर उसी तरफ आया। व्यापारी डर के मारे पेड़ पर चढ़ गया। शेर ने खरगोश को लोमड़ी के आगे डाला और चला गया। यह देख व्यापारी की विचारधारा पुनः बदली, उसने सोचा, ईश्वर है तभी उन्होंने बेचारी लोमड़ी की सहायता के लिए शेर को भेजा है। फिर व्यापारी ने निर्णय लिया कि अब मैं व्यापार नहीं करूँगा, जैसे ईश्वर ने लोमड़ी को सहारा दिया, वैसे ही मुझे भी देंगे। वह पेड़ के नीचे बैठ गया। कई दिन बीत गये, भूख के मारे उसकी हालत खराब होने लगी। तभी साधुओं की एक मंडली वहाँ से गुजरी। उन्हें व्यापारी की हालत पर तरस आ गया। एक साधु ने पूछा, भैया, तुम्हारी यह हालत कैसे हुई? व्यापारी ने सारी बात कह सुनाई और कहा, साधुजी, अब तो मुझे निश्चय हो गया है कि ईश्वर कहीं नहीं है वरना मेरी ऐसी हालत न होती। साधु बोला, देखो व्यापारी, हर परिस्थिति हमें कुछ सिखाने आती है, यह भी तुम्हें सिखाने के लिए आई थी। तुम्हारे लिए सीख यह थी कि शेर जैसे बनो और असहाय लोगों की सहायता करो लेकिन तुमने उसे ग्रहण न कर लोमड़ी जैसा बनने का निर्णय ले लिया। तुम्हारे गलत निर्णय के कारण तुम्हारी यह हालत हुई है।

उपरोक्त दृष्टांत का सार यह है कि इस संसार में गिरने वाले, गिराने वाले, सहारा देने वाले, उठाने वाले सब प्रकार के लोग हैं जिन्हें हम प्रतिदिन अपना-अपना पार्ट बजाते हुए देखते हैं। कई लोग लोमड़ी की तरह असहाय भी हैं और कई शेर की तरह दाता भी। अब यह चुनाव हमें करना है कि हम असहाय, बेसहारा, दीन-हीन बनकर दूसरों की दया पर, भीख पर, सहायता पर ज़िन्दा रहना चाहते हैं या दाता, कर्मठ, आत्मविश्वासी बनकर दूसरों का सहारा बनना चाहते हैं, निर्णय हमारा है।

कई कहते हैं, दाता बनना किसे अच्छा नहीं लगता पर हमारी परिस्थिति ऐसी है, जो दूसरों का सहयोग ज़रूरी है। **ऐसा भी होता है परन्तु दूसरों का सहयोग उसी प्रकार स्वीकार करें जैसे छत डालने से पहले बाँस की बल्लियों का सहारा दिया जाता है, फिर उन्हें हटा लिया जाता है। फिर तो वह छत स्वयं अनेकों का भार उठाने में समर्थ हो जाती है।**

# भय की भयानक बीमारी

● ब्रह्माकुमारी किरण, मुम्बई (बोरिवली)

भय एक मानसिक बीमारी है। मनोचिकित्सक इसे मनोरोग कहते हैं, आम आदमी इसे डर कहता है, कई इसे तनाव, टेन्शन और स्ट्रेस भी कहते हैं। जैसे शारीरिक बीमारियाँ होती हैं, जिनमें से कुछेक आकर चली जाती हैं, कुछेक स्थायी हो जाती हैं, वैसे ही भय मन की स्थायी बीमारी है।

जब व्यक्ति को डर लगता है तब वह पसीना-पसीना और गर्म भी हो जाता है। जब दौड़ लगाते हैं तो पसीना निकलता है, वह शरीर के लिए अच्छा है परंतु डर के समय जो पसीना निकलता है, उस समय शरीर में एक ऐसा कैमिकल पैदा हो जाता है जो शरीर को नुकसान पहुँचाता है।

**भय किस बात का?**

यहाँ पर हम चूहे, बिल्ली या छिपकली के डर की बात नहीं कर रहे हैं। हम उस डर की बात कर रहे हैं जो परिस्थिति आने से पहले भी लगता है और परिस्थिति जाने के बाद भी लगता है। मान लीजिये, हमें बिल्ली से डर लगता है, क्यों? क्योंकि हमने या तो सुना हुआ है कि बिल्ली ऐसा-ऐसा करती है या तो हम स्वयं ही उस बात से यानि बिल्ली से हार खा चुके होते हैं। वैसे ही परिस्थितियों से भी तब डर लगता है जब या तो हमने उनके बारे में सुना हुआ होता है या तो हम स्वयं ही उस परिस्थिति से कई बार हार खा चुके होते हैं और वह हार डर में बदल जाती है। विचार आता है कि अरे, यह परिस्थिति पुन: आयेगी पर मैं तो सामना करने के लिए तैयार नहीं हूँ। हम डर जाते हैं परंतु डरकर पीछे भागना तो कायरता की निशानी है।

डर को हटाकर हमें हिम्मत लानी होगी क्योंकि जिसके अंदर हिम्मत होगी, उसे सभी मदद करते हैं और जो खुद ही हारकर बैठा है, उसे भगवान तो क्या इंसान भी मदद नहीं करेंगे। इसलिए कहा ही जाता है, हिम्मते मर्दा, मददे खुदा।

**किन बातों से हम डरते हैं?**

डर कोई भी हो सकता है: 1.व्यक्ति का, 2.परिस्थिति का और 3.मृत्यु का।

**1. व्यक्ति से डर:-** कई बार हम किसी व्यक्ति से डरते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं। या तो हम उसके कर्ज़दार होते हैं। उसका नाम सुनते ही हमें पसीना छूटने लगता है या फिर वह व्यक्ति हमेशा हमारी सफलता में बाधा बनता रहता है। ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो हर वक्त हमें डाँटते ही रहते हैं, इसलिए हम कुछ बोलने से या कर्म करने से भी डरते हैं। वे हमारी हर बात को बिना सुने और बिना सोचे-समझे काटते ही रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए सुनने को मिलता है कि इनसे तो बात करना ही बेकार है। ऐसे व्यक्ति किसी के भी साथ इंसानियत के नाते का व्यवहार नहीं करते हैं। सचमुच ऐसे व्यक्तियों से डर लगता है।

चलो हम किसी से नहीं डरते हैं परंतु हम चेक करें कि कोई हमसे तो नहीं डरता है क्योंकि डर से बहुत नुकसान होते हैं जो डरने वाले और डराने वाले को ध्यान में रखने चाहिएँ। कोई हमारे द्वारा इतने नुकसान का भागी बने तो सोचो, हमारा भविष्य क्या होगा?

**2. परिस्थिति से डर:-** हमें सदा यह याद रहे कि जिन परिस्थितियों से हम डरते हैं और फिर सोचते हैं कि कहीं फिर से मेरे साथ ऐसा ना हो जाये, तो ध्यान रहे कि हम जो सोचते हैं, उसका चित्र भी हम बनाते जाते हैं (मन और कोई भाषा नहीं जानता, चित्रों की भाषा समझता है)। 'मेरे साथ ऐसा ना हो जाये', इसमें 'ना' शब्द का कोई चित्रीकरण नहीं होता है। जैसे हम सोचते हैं कि 'कहीं मैं गड्ढे में ना गिर जाऊँ' तो उसका चित्र हम कैसा बनायेंगे? जरा मन में चित्र बनायें और देखें। कैसा चित्र बना? बीच में से 'ना' शब्द हट जाता है और हम गड्ढे में गिर ही जाते हैं। यह तो है विचारों का

नियम।

वैसे ही कार्मिक नियम अनुसार भी वही परिस्थिति हमारे सामने बार-बार आती है जिसमें हम नापास हुए होते हैं। वही पेपर बार-बार देना पड़ता है जिसमें हम फेल होते हैं। तो हमें उस परिस्थिति से सीखकर आगे बढ़ना चाहिए अर्थात् पास होने के लिए डर निकालकर, हिम्मत रखकर, अनेक बार की हार से सीख लेकर पास होकर दिखायें। फिर वह परिस्थिति आयेगी ही नहीं। 'आयेगी नहीं' का अर्थ है कि परिस्थिति तो आयेगी परंतु उसमें हमें क्या करना है, वह हमें पता चल चुका होगा। हमें उत्तर आता होगा तो हम प्रश्न से डरेंगे नहीं। वैसे तो कहा जाता है कि परिस्थितियाँ जीवन में आनी चाहिएँ क्योंकि

'वह पथ क्या,
पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हों,
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
यदि धारायें प्रतिकूल न हों।'

**3.मृत्यु से डर:-** आज के संसार में सबसे बड़ा डर मृत्यु का है। चाहे राजा हो या रंक, प्रजा हो या मंत्री, सभी इस भय से ग्रसित हैं। इसलिए तो कहा जाता है, 'कोई न जाने कब ज़िन्दगी की आखिरी शाम आ जाये।' जी हाँ, मौत का कोई भरोसा नहीं है परंतु अगर हम मृत्यु से डरते रहेंगे तो एक बार मरने से पहले हम बार-बार मरेंगे। इससे तो अच्छा है कि एक ही बार मरें और खुशी से जीकर फिर खुशी में मरें। दुनिया में सारी चीजों की कीमतें बढ़ती जा रही हैं परंतु इंसान की कीमत कम होती जा रही है। एक तरफ बढ़ती महंगाई, दूसरी ओर बीमारियाँ, बीमारियों ने तो कहर मचा रखा है। पाँच साल के बच्चे को शुगर (मधुमेह), 12 साल के बच्चे को बी.पी., 22 साल के युवाओं को हार्ट अटैक, 32 साल में तो कैंसर जैसी बीमारी आ जाती है और सारा काम तमाम करके जाती है। तीसरी तरफ हैं मानसिक बीमारियाँ, तनाव, स्ट्रेस, बिगड़े हुए संबंध, भय, हीन भावना आदि-आदि और चौथी तरफ यह प्रश्न है कि हमारा भविष्य क्या होगा? नौकरियाँ मिलती नहीं हैं। हमारे बच्चों का भविष्य क्या होगा? इस प्रतिस्पर्धा की दुनिया में चारों तरफ से मनुष्य भय की आहें भर रहा है। एक पल भी न खुशी है, न सुख है, न सुकून है। चारों तरफ तो छोड़ो, सिर के ऊपर भी मौत की तलवार लटक रही है जिसे हम आतंकवाद कहते हैं और नीचे से भी ज़हरीले सांपों की तरह मौत घूम रही है अर्थात् प्राकृतिक प्रकोप भी बढ़ते ही जा रहे हैं। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि, कहीं आग में पानी डालते हैं तो कहीं पानी में आग लगती है। आखिर इंसान जाये तो जाये कहाँ?

### भय से मुक्ति

हर प्रकार के भय से मुक्ति पाने के लिए हमें सत्यता जानना बहुत ज़रूरी है। जब किसी छोटी-सी बात की भी सत्यता मालूम हो जाती है तो भय निकल जाता है। तो इतने बड़े-बड़े भय के लिए भी तो दुनिया का बहुत बड़ा सत्य होगा जिसे जानकर हम भय से मुक्ति पा सकते हैं। सबसे बड़ा पहला सत्य यह है कि यह सारी दुनिया ही खत्म होने वाली है, यह कयामत का समय चल रहा है और अब नई सतयुगी दैवी दुनिया आने वाली है। दूसरा सत्य यह है कि इस कयामत के समय में हरेक मनुष्य अर्थात् हम सभी अपने-अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। भूकंप, सुनामी, महंगाई, बीमारी, ये सब क्या हैं? हमारे ही पापकर्मों के फल हैं जिनके वायब्रेशन पाँच तत्वों में जाने से तत्व भी कराह रहे हैं। वे भी हमसे बदला ले रहे हैं।

भय से मुक्ति पाने के लिए और एक सर्वोच्च सत्य बात है जिसे जानकर दुनिया आश्चर्यचकित हो जायेगी। कई तो इस सत्य बात को असंभव भी मानेंगे। सत्यता यह है कि इस कलियुग के अंतिम समय में स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा जिन्हें हम भगवान कहते हैं, वे धरती पर आ चुके हैं, आ चुके हैं, आ चुके हैं। वे आकर कुछ ऐसी बातें सुना रहे हैं जिनसे हम बहुत जल्दी किसी भी भय से मुक्ति पा सकते हैं। इसके लिए आप किसी नजदीक के ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर संपर्क कर सकते हैं।

### भय के नुकसान

1. भय मनुष्य की हिम्मत को खा जाता है और मनुष्य सहमा-सहमा सा रहता है।
2. भय से आत्मविश्वास कमज़ोर पड़ जाता है और आंतरिक शक्तियों का ह्रास होता है।
3. भय के कारण हमारी कार्यक्षमता घट जाती है। हमारे रोज़ाना के कार्य भी बिगड़ते हैं और हम कोई नया कार्य भी नहीं कर पाते हैं।
4. भय के कारण समय, संकल्प, श्वास व्यर्थ जाते हैं।
5. भय से हम सत्य होते हुए भी कमज़ोर पड़ जाते हैं।

### भय को भगायें कैसे?

सबसे पहले तो भय शब्द को ही सकारात्मक रूप दे देवें कि अरे, मुझे तो सारी दुनिया के डर को मिटाना है तो मैं कैसे डर सकता हूँ? फिर अगर किसी व्यक्ति से डर लगता हो तो यह सोचें कि यही मेरे आगे बढ़ने की सीढ़ी है। परिस्थितियों से डर लगता है तो उस समय यह सोचें कि जैसे दौड़ में जीतने वाला घोड़ा यह नहीं जानता कि जीत क्या होती है, वह तो अपने मालिक के कोड़ों से दौड़ता है और जीत जाता है, इसी प्रकार, परिस्थिति आये तो सोचना कि मालिक मुझे जिताना चाहता है।

और मौत से क्यों डरना? वो भी रोज़-रोज़ जबकि वो आनी तो एक ही बार है ना! फिर हम भय का भूत लिये रोज़-रोज़ क्यों घूमते हैं? अच्छा, अगर मर गये तो क्या हुआ? बीच में भगवान से मुलाकात हो जायेगी, नया शरीर, नया घर, नये रिश्तेदार मिलेंगे। बस, इसी सोच से हम खुशी में रह सकते हैं। जिन्दादिली से जीवन जीयें। इतना खुश रहें कि मौत दरवाज़े पर दस्तक देकर चली जाये और कहे कि अरे, इनकी तो यहीं ज़रूरत है। यह बात सत्य है कि बीमारी के वक्त खुश रहने से बीमारी खत्म हो जाती है और खुश रहने से आयु बढ़ती है। हम और ज्यादा अच्छे कर्म कर सकते हैं और मृत्यु के भय से आज़ाद हो सकते हैं। अंत में मुझे एक शेर याद आ रहा है

'मुश्किलें दिल के इरादे बदलती हैं,
ख्वाबों के परदे निगाहों से हटाती हैं,
गिरकर हौसला मत हारना मेरे दोस्त,
यही ठोकरें तो हमें जीना सिखाती हैं।'

याद रखिये, जब तक जीवन में कोई विपरीत परिस्थिति नहीं आती, तब तक हम आगे भी नहीं बढ़ सकते इसलिए डरना मना है।

## एक बार सुन जायें

**ब्रह्माकुमार अखिलेश, अलीबाग, मुम्बई (सायन)**

आज हर तरफ फैला तनाव ही तनाव है,
पाप भ्रष्टाचार की हवा का बहाव है।
हर एक के विचारों में आपसी टकराव है,
धरती का टुकड़ों में हो रहा बिखराव है।।
**आज हर तरफ.....**
अपनी ही तकलीफों से आज हर एक परेशान है,
फँसता ही जा रहा दलदल में हर एक इन्सान है।
बना कर के रखा हमने दुखों का मकान है,
इस तरह आज चिन्ता से घिरा सारा जहान है।।
**आज हर तरफ.....**
यहाँ पर मेरी ये सलाह शायद काम कर जाये,
आप जब जो भी चाहें, सब वैसा ही हो जाये।
पूरी तरह से आपको सब तकलीफों से छुड़ाये,
अकाल के गाल से भी सुरक्षा कवच पहनाए।
क्या कहते हैं परमात्मा, बस एक बार सुन जायें,
आकर के उनके सम्मुख, दिव्य वरदान पायें।
सलाह नेक उनकी अपने दिल में उतार जायें,
अनुभव अखुट प्यार का मन-गागर में भर कर जाएं।
बस इतनी-सी वफा जो आप खुद से निभा पायें,
मजाल क्या जो एक पल भी खुशी, आपका दामन छोड़ जाये।

# परमात्मा से जुड़िये

● ब्रह्माकुमारी काजल सिंह गहरवार, रीवा

परमात्मा की याद में रह कर्म करने वाले हम केवल निमित्त हैं। हम जब सृजनात्मक होंगे, तभी परमात्मा से जुड़ेंगे। बिना सृजनात्मक हुए हम परमात्मा से कटे-कटे जियेंगे। परमात्मा से कटे तो संसार के मोह में पड़े, यह निश्चित है।

बस यूँ ही वक्त गुज़र जाता है, जीवन हाथ से निकल जाता है और एक दिन मौत द्वार पर दस्तक देने आ जाती है। फिर भी होश नहीं आता। रोज़ हमारे जैसे लगभग डेढ़ लाख मनुष्य पृथ्वी से विदा हो जाते हैं फिर भी हम चौंकते नहीं, जागते नहीं। जो विरला जाग जाता है, वह प्रभु को पहचान जाता है। ऐसे जागृत लोग अन्य सभी को मोह-निद्रा से जगाने का प्रयास करते हैं। कहा गया है –

बालस्तावत् क्रीडासक्त:
तरुणस्तावत् तरुणी आसक्त:।
वृद्धस्तावत् चिन्तासक्त: परे
ब्राम्हणि कोऽपि न सक्त:।।

अर्थात् बालक खेल में आसक्त रहता है, युवक तरुणी के प्रेम में आसक्त रहता है और वृद्ध चिंताओं में आसक्त रहता हैं। वह कभी भी परमात्मा के प्रति संलग्न नहीं होता और जीवन यूँ ही चला जाता है। परमात्मा को हम टालते चले जाते हैं कल पर और कल लाता है सिर्फ काल। परमात्मा को याद नहीं कर पाते हैं और मौत आ जाती है। अत: हे मानव, परमात्मा को पहचानो, उसे याद करो, वह आया हुआ है तुम्हें दुखों के बंधन से छुड़ाकर सुखधाम का रास्ता बताने।

### जगाओ अपने को

जब भी होश आ जाये, थोड़ा जगाओ अपने आपको। कहाँ तुम उलझे हो? तुम्हारे कृत्यों का क्या परिणाम हो सकता है? तुम्हारे कृत्य, तुम्हारा धन, तुम्हारी प्रतिष्ठा सब पड़ी रह जायेगी। जो पड़ा ही रह जायेगा, उसके साथ बहुत समय व्यय मत करो। जितना जल्दी जाग जाओ, उतना ही अच्छा है।

### देह-आसक्ति छोड़ें, सुखी बनें

जीवन के प्रति जिसकी आसक्ति नहीं टूटी, परमात्मा के प्रति उसकी आसक्ति नहीं जुड़ पाती। जीवन के प्रति अगर तुम बहुत अनुरक्त हो तो तुम परमात्मा को नहीं पहचान पाओगे। रूप के प्रति जिसकी आसक्ति है, वह अरूप (देह रहित) को कैसे पहचानेगा? पदार्थ पर जिसकी पकड़ है, वह निराकार को कैसे पकड़ेगा? पृथ्वी पर जिसका ध्यान लगा है, वह आकाश की तरफ आँख भी नहीं उठा पाता। जब तक आसक्ति की जड़ें न टूट जायें, जब तक अनुभव न कर लो कि सिवाय दुख के वहाँ कुछ भी नहीं है, तब तक सुख के लिए बनाई गई योजनायें ऐसी हैं जैसे कोई रेत को निचोड़कर तेल निकालने की चेष्टा कर रहा हो। वह हाथ खाली ही रह जाता है।

अगर भरे हाथ जाने की तैयारी है तो जितनी जल्दी हो सके परमात्मा को याद करो, उसकी याद में लीन हो जाओ, ज्यादा समय और शक्ति उसकी याद में लगाओ। यही शुभ है। एक ही चीज़ तुम्हें भर सकती है और वह है परमात्मा का प्रेम। आश्चर्य है, उसकी तरफ तुम ध्यान नहीं देते हो और जिनसे तुम कभी न भर सकोगे, उनकी तरफ ध्यान लगाये रहते हो।

### सरलता जोड़ती है परमात्मा से

बहिर्मुखी प्रेम से हम बाहर उलझ गये हैं, परमात्मा से विपरीत चले गये हैं। लेकिन अब परमात्मा के करीब जाना है, शान्ति पाना है, आनन्द पाना है। अब हमें अपने प्रेम की दिशा बदलनी है, इसे अंतर्मुखी करना है। कुटिलता संसार में फँसाती है और सरलता परमात्मा से जोड़ती है। अगर परमात्मा से जुड़ना है तो सरल होने की कला सीखनी होगी और यह सुंदर कला नि:शुल्क सिखाई जाती है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में। ❖

# बुझे दीपक को लौ मिल गई

● ब्रह्माकुमार दीपक चन्द्र, वसुंधरा (गाजियाबाद)

मेरा जन्म उत्तराखण्ड के एक छोटे-से गाँव में हुआ। कक्षा पाँचवीं तक शिक्षा लेने के पश्चात् माता-पिता के साथ दिल्ली आना हुआ। शहर की मायावी दुनिया में आकर, गाँव का भोला-भोला जीवन पीछे छूट गया। ब्राह्मण परिवार में जन्म होने के नाते पूजा-पाठ, भक्ति के संस्कार स्वत: आ गये थे। शिक्षा पूरी करने के बाद एक बड़ी कंपनी में नौकरी मिली और जीवन की दिशा बदल गई।

### प्रश्नों में उलझा जीवन

पूजा-पाठ का नियम छूटने लगा, मन व्यर्थ विचारों से घिरने लगा। विलासिता भरा जीवन, एक-दो को रौंदकर आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा तथा अहंकार से लबालब दृष्टिकोण ने जीवन को दिशाहीन बना दिया। अपनी मर्ज़ी से शादी करने के बाद तो माता-पिता से एक दूरी-सी बन गई लेकिन कभी-कभी यह अहसास होता था कि अगर इसी को सुखी जीवन कहते हैं तो बार-बार दुख की भासना क्यों आती है? क्यों मन हमेशा खुश नहीं रहता? क्यों दूसरों से ज्यादातर शिकायतें बनी रहती हैं? प्रश्नों से जीवन उलझता जा रहा था।

### नर्क की ओर अग्रसर जीवन

अचानक एक मित्र की मौत ने जीवन को जैसे अंदर तक हिला दिया। उस मित्र के साथ जीवन के कई हसीन पल गुजारे थे। उन यादों ने बार-बार कहा कि अब तेरे जीवन का भी कोई अर्थ नहीं रह गया है। परिवार वालों, दोस्तों के लाख समझाने पर भी 'क्या यही जीवन है', इस प्रश्न ने मन को मथ डाला।

कार्यालय के काम में मन नहीं लगता था। एक बोझ, एक पीड़ा, एक दबाव, एक दर्द, एक डर हमेशा ही मन में बना रहता था। शराब, सिगरेट की मात्रा बढ़ने लगी। स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरने लगा। रक्तचाप, मानसिक तनाव बढ़ने लगा। परिवार वाले अत्यंत दुखी रहने लगे। माता-पिता, पत्नी व एक बेटा हमेशा मेरी ही चिंता में लगे रहते। अपनी व उनकी यह हालत देख अपने से ग्लानि महसूस होती परंतु शाम होते ही फिर शराब में डूब जाता। घर आकर पत्नी व बेटे को अपशब्द कहता, इस प्रकार जीवन नर्क की ओर अग्रसर हो चला था।

### शान्ति की खोज में भटकता जीवन

मात्र 35 वर्ष की आयु में ही जैसे सब कुछ थम-सा गया था। अब तो दिन में भी शराब का सहारा लेने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं होती

थी लेकिन नशा उतर जाने के बाद मन पश्चाताप से भर उठता कि एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर (जहाँ पूरे परिवार में कोई भी शराब व अन्य नशीले पदार्थों को छूता भी नहीं) जीवन क्यों विपरीत दिशा, विपरीत चिंतन, पतन की ओर जा रहा है। दुखी होकर एकांत में भगवान से शांति की भीख माँगता और पूछता कि क्या इसी को मनुष्य जन्म कहते हैं। शांति की तलाश में जीवन भटकने लगा। मंदिर, गुरुद्वारा, गुरुओं के आश्रम आदि में जाकर भी शांति का अनुभव नहीं कर सका।

### शान्ति की अनुभूति

घर की बालकोनी से कभी-कभी कुछ लोगों को सफेद कपड़े पहने हुए जाते देखता था। एक दिन मन में विचार आया कि चल कर देखा जाये शायद कुछ मिल जाये। क्या पता था कि भगवान की नज़र मुझ दुखियारे

पर पड़ चुकी है। घर से मात्र 100 कदम की दूरी पर ब्रह्माकुमारीज़ गीता पाठशाला है। जैसे ही मैंने घंटी बजाई, एक महिला ने मुसकराते हुए दरवाज़ा खोला। जैसे ही मैंने उस अलौकिक तेजयुक्त चेहरे को देखा, अहसास हुआ कि यहाँ से ही कुछ प्राप्ति हो सकती है। मैंने अपना परिचय बहनजी को दिया व बहनजी ने बड़ी आत्मीयता से अपना व ब्रह्माकुमारी संस्था का परिचय मुझे दिया। मुझको विशेष शांति की अनुभूति हुई, बहनजी से समय लेकर मैं चला आया लेकिन दो-तीन दिन तक नहीं जा सका। शांति की अनुभूति ने मुझको पुन: खींचा और एक सुबह क्लास में जाकर बैठ गया। बहनजी ने मेरे दो दिन न आने का कारण पूछा और कहा, भैया, हम आपका इंतजार कर रहे थे। इन शब्दों ने मुझे अपनेपन का अहसास दिलाया और उनकी दृष्टि से मुझको अपने इस बुझे हुए दीपक में एक रोशनी की किरण दिखाई दी।

### दलदल से जीवन ज़मीन पर आ गया

मुझको एक भाई जी साप्ताहिक कोर्स कराने लगे। मुझको ईश्वरीय ज्ञान तृप्त तो कर रहा था लेकिन मैं ज्ञान के साथ गहन शांति का अनुभव करना चाहता था। कोर्स पूरा होने पर मैं मुरली क्लास में नियमित रूप से आने लगा। एक बृहस्पतिवार को जब शिवबाबा को भोग स्वीकार कराने के समय योग में बैठा तो मुझको गहन शांति की अनुभूति हुई व बहनजी से दृष्टि व अमृत लेते अनुभव हुआ कि मैं एक विशेष दुनिया में आ चुका हूँ। अंदर से निकला, दीदी, इस ज़मीं पर ऐसी भी दुनिया हो सकती है, मुझे पता नहीं था। हर कोई अपना-सा लगने लगा और दैवी परिवार की आत्माओं से विशेष स्नेह मिलने लगा। एक महीने में ही मेरा जीवन जैसे दलदल से निकल ज़मीन पर आ गया और कभी-कभी तो धरातल से आकाश की ओर भी उड़ने लगा। अपना परिचय, परमात्मा का यथार्थ परिचय व सृष्टि-चक्र का ज्ञान मुझे मिल गया। मैं अपने आपको धन्य महसूस करने लगा। सभी बुरी आदतें स्वत: ही छूट गईं। आत्मा को अंदर की शांति प्राप्त होने लगी।

### अनुशासन की प्रेरणा

यहाँ आते रहने से ऐसा लगने लगा मानो शरीर और आत्मा में नई ऊर्जा का संचार कराया गया हो। जीवन को एक दिव्य दिशा मिल गई। परमात्मा साथी बन गया। मन को खुशियों के पंख लग गये। शांति के साथ-साथ सुख का भी बोनस मिल गया। खुद को मानो एक विशेष पद की प्राप्ति हो गई। भाग्य चमक उठा। धरा पर स्वर्ग मिल गया। बुझे हुए दीपक को लौ मिल गई। सेवाकेन्द्र का अनुशासन देख जीवन में अनुशासित रहने की प्रेरणा मिली। अनुशासन को प्रैक्टिकल जीवन में लाने से मुझको अपने कार्यक्षेत्र (ऑफिस) में विशेष सफलता मिलने लगी। जिस अनुशासन को केवल पुस्तकों में महापुरुषों के वाक्यों द्वारा समझते थे, वह अब जीवन में आने लगा। मेरे दोस्त तथा कुछ संबंधी भी अब इस ईश्वरीय परिवार का हिस्सा बन चुके हैं। वे भी अपने जीवन को दिव्यता से भरपूर कर रहे हैं। अब तो बस मन यही कहता है, पाना था सो पा लिया अब और क्या बाकी रहा।

❖


## घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

**नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।**

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है।

अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान

**मोबाइल:** 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49

**वेबसाइट:** www.ghrc-abu.com **फैक्स:** (02974) 238570

**ई-मेल:**drmurlidharsharma@gmail.com

# ईश्वरीय पढ़ाई से अच्छा चलता है घर

● निशा गेरा, जनकपुरी, नई दिल्ली

सन् 2009 में मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में राजयोग सीखने आई। शिवबाबा की शिक्षाएँ सुनते-सुनते सब बातें स्पष्ट हो गईं। हर बात इतनी सत्य और तर्कयुक्त लगी कि मन विश्वास न करे, ऐसा हो ही नहीं सकता।

### जीवन के हर पहलू में काम आ रही है शिक्षा

ऐसा लगने लगा कि अब तक हम भगवान को याद करते थे और अब भगवान ने हमारी उंगली पकड़ ली है। उस दिन से आज तक कैसी भी परिस्थिति आई पर शिव बाबा ने अपनी शिक्षाएँ कभी छूटने नहीं दी, मानो घर बैठे हमारी पालना करते रहे हैं। उनकी शिक्षा जीवन के हर पहलू में काम आ रही है। लोग समझते हैं कि ब्रह्माकुमार, कुमारियां घर छुड़वाते हैं। कई बार भाई लोग, विशेष रूप से इस विद्यालय के नाम से दूर भागते हैं परन्तु जब भगवान के प्यार का अनुभव हो जाता है तब वे भी कहने लगते हैं कि बात तो ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ठीक है। कई फिर ठीक मानने के बाद भी अपने पुराने संस्कारों के कारण इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में पढ़ने का लाभ लेने की हिम्मत नहीं करते। लेकिन, यह सुनिश्चित है कि घर के सभी सदस्य इस पढ़ाई को पढ़ने लग जाएँ तो हर घर स्वर्ग हो जाएगा। बाबा की शिक्षाएँ घर छुड़वाती नहीं हैं बल्कि घर को और अच्छा चलाने की हिम्मत देती हैं।

### वैराग्य का अर्थ है स्नेह का विस्तार

जब राजयोग के अभ्यास से हममें शक्तियां आने लगती हैं तो ज़िन्दगी को जीना आसान हो जाता है। अपनी पहचान, परमात्मा की पहचान पाने के बाद परमात्मा के गुणों की धारणा से जीवन संवरने लगता है। लोग सोचते हैं कि वैराग्य ठीक नहीं है लेकिन मुझ आत्मा का अनुभव तो यह है कि मन में वैराग्य आने से ही हम अच्छी ज़िन्दगी जी सकते हैं। वैराग्य का असली अर्थ ही यह है कि हमें अपने स्नेह को विस्तृत करना है, उसे कुछ लोगों के प्रति मोह तक सीमित नहीं रखना है।

### अच्छाइयाँ देखेंगे तो इंसान हमारा हो जायेगा

मुरली (ईश्वरीय पढ़ाई) के कई महावाक्य ऐसे हैं, जो हर इंसान की ज़िन्दगी बदल सकते हैं। पहला तो यह कि हम दाता बनना सीख जाते हैं, इससे अपेक्षाओं की वजह से उठाए गए सारे बोझ उतर जाते हैं और खुद को हल्का महसूस करते हैं। जब हममें देने की प्रवृत्ति जाग जाती है तो हम हमेशा खुश रह सकते हैं। व्यर्थ संकल्प नहीं चलते। दूसरी बात, अगर हमें हर बात में बीती को बीती करना आ जाए तो फालतू विचारों की वजह से होने वाली मानसिक बीमारियों से बच सकते हैं। तीसरी बात, हरेक में कोई न कोई विशेषता देखनी है। कमियां देखनी हैं तो खुद में देखनी हैं। जब हम दूसरों की अच्छाइयां देखेंगे तो वो इंसान हमारा हो ही जाएगा, दूरियां कहां रह जाएंगी।

### पवित्रता का अर्थ है पाँचों कर्मेन्द्रियों की पवित्रता

मुरली में कहे गए महावाक्यों में पवित्रता शब्द का अर्थ है पांचों कर्मेन्द्रियों की पवित्रता जिसके आने से हम हल्के रहेंगे। कान में कुछ गलत गया ही नहीं, आंखों से कुछ गलत देखा ही नहीं तो मन में गलत चिंतन नहीं चलेगा। मुंह से कुछ व्यर्थ बोला ही नहीं तो जीवन में शान्ति आना स्वाभाविक है। फिर स्वस्थ और समृद्ध तो अपने आप ही हो जाएंगे। मन सौ प्रतिशत बाबा की याद में, हाथ सौ प्रतिशत बाबा की सेवा में व्यस्त होंगे तो सफलता है ही है। शिकायतें समाप्त हो हम सम्पन्न हो जाएंगे। ❖

# सकारात्मक विचार

● ब्रह्माकुमार भगवान, शान्तिवन

सकारात्मक विचार ही सर्व समस्याओं का समाधान हैं। दिन-भर में आने वाली विपरीत परिस्थितियों के बारे में सकारात्मक सोच रख स्वयं को हल्का रखने वाला ही आत्म-चिन्तन, परमात्म चिंतन कर सकता है, मन-बुद्धि को एकाग्र कर सकता है, समय और संकल्प को बचा सकता है, सरलचित्त बनकर हर एक के साथ एडजेस्ट हो सकता है। सकारात्मक सोच रखने वालों के पास ही अष्टशक्तियाँ आती हैं। जिसके पास अष्टशक्तियाँ हैं, उसके पास सारे सद्गुण भी आते हैं। जिसके पास शक्तियाँ और सद्गुण हैं वही स्वराज्य अधिकारी सो भविष्य राजअधिकारी बनता है। शक्तियाँ और सद्गुण ही जीवन में विजयी बनने के साधन हैं। अगर कोई विघ्न डालता है, चुगली करता है, हमारी शिकायत करता है तो ऐसे व्यक्ति को देखते ही मन में नकारात्मक विचार आते हैं। उसके बारे में वृत्ति, दृष्टि, दृष्टिकोण और व्यवहार भी नकारात्मक बन जाता है। विघ्न डालने वालों के प्रति मन में नफरत, घृणा, वैर-विरोध पैदा हो जाता है, स्वप्न में भी नकारात्मक विचार चलते हैं जिस कारण आपसी टकराव निर्माण हो जाता है, मन में तनाव उत्पन्न हो जाता है, मन-बुद्धि की भटकन शुरू हो जाती है। यह हर एक की समस्या है।

**हरेक का पार्ट कल्याणकारी है**

याद रखें, विघ्न निर्माण करने वाले व्यक्तियों के कारण ही कल्याण होगा। परमात्मा ने हर आत्मा को कल्याणकारी पार्ट दिया हुआ है। हमारे पड़ोसी, मित्र, संबंधी, रिश्तेदार ये सब कल्याण करने वाले हैं। अगर इस सकारात्मक दृष्टिकोण से देखेंगे तो तनावमुक्त रह सकेंगे और आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। उनके साथ शुभ-भावना, शुभकामना संपन्न व्यवहार रहेगा। जीवन में विघ्न या समस्यायें निर्माण करने वाले लोग वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं। इस पर भक्तिमार्ग के शास्त्र रामायण की प्रेरणादायी घटना याद आ रही है। मंथरा ने केकैयी के कान में यह चुगली कर दी कि राम के स्थान पर भरत राजा होने से तुम्हारा हित होगा। केकैयी ने इस चुगली से प्रभावित होकर राजा दशरथ से वर माँग लिये जिनके आधार पर राम को वनवास और भरत को गद्दी मिलने का वचन राजा दशरथ को देना पड़ा। श्रीराम के साथ सीताजी, लक्ष्मण भाई भी वन में गये और अनेक प्रकार के कष्ट सहे। यह सब मंथरा के कारण हुआ इसलिए उसके प्रति ग्लानि उत्पन्न होना स्वाभाविक है परंतु इसी प्रसंग का दूसरा पहलू भी है। यदि मंथरा ऐसा ना करती तो श्रीराम वन में नहीं जाते, फिर न सीता की चोरी होती, न रावण मरता, न श्रीराम की इतनी महिमा होती। श्रीराम को महिमा योग्य बनाने के निमित्त मंथरा है। यह इस घटना का सकारात्मक पहलू है।

**विघ्न बनाते हैं महिमा योग्य**

याद रहे, विघ्न और समस्याएँ ही हमें महिमा योग्य बनाते हैं। विघ्नों में हमारा कल्याण समाया हुआ है। इसलिए कभी एकांत में बैठकर, आज तक जिन्होंने विघ्न या समस्यायें निर्माण की हैं, उनको मन ही मन धन्यवाद दो और कहो कि आप लोगों ने विघ्न डाला इससे हमारा अब तक बहुत अच्छा हुआ है। फिर पाँच हजार वर्ष के बाद विघ्न डालने के लिए ज़रूर आना। यह है विघ्न डालने वालों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण। ऐसे दृष्टिकोण से ही हम बीती को भुला सकेंगे। मन-बुद्धि शुभभावना, शुभकामना से संपन्न रहेंगे। मन में क्षमाभाव, दयाभाव, सहनशीलता, धैर्य, एकाग्रता पनपने लगेंगे। इसलिए ऐसी बातों से तनाव में आने की आवश्यकता ही क्या है! विघ्न, परिस्थितियाँ, समस्यायें हमें उपराम या वैरागी और नष्टोमोहा बनाते हैं। ये शुरू में कड़वे लगते हैं लेकिन अंतिम परिणाम तो मीठा ही होता है। जिनके जीवन में विघ्न

अधिक होते हैं, उनका भविष्य का पद भी ऊँचा होता है क्योंकि विघ्नों से ही लगन बढ़ती है। समस्याओं में ही परमात्म-याद सहज आ सकती है इसलिए शिवबाबा हमेशा कहते हैं कि बांधेली माताओं का योग ज्यादा रहता है। जहाँ बंधन हैं वहाँ लगन भी अच्छी होती है। इसलिए विघ्नों से घबराने के बजाय उनको सकारात्मक रूप में लेकर उनका सामना करें तब शक्तिशाली बन सकेंगे।

### ईश्वर मिलन अनेक कड़वी घटनाओं का परिणाम

एक दिन एक माता ने मुझे प्रश्न पूछा, भाई जी, ड्रामा पुनरावृत्त होगा? मैंने कहा, हाँ जी। माता ने कहा, मेरे जीवन में कुछ दुखभरी घटनायें हुई हैं जिनको पार कर अब मैं अच्छी जगह पर आकर चैन का श्वास ले रही हूँ लेकिन फिर वे घटनायें न हों तो अच्छा है। मैंने माताजी से एक प्रश्न पूछा, माताजी, आप बापदादा से मिलने के लिए आये हो तो यह घटना आपको अच्छी लगी? वह बोली, हाँ, ऐसी घटना एक बार नहीं लेकिन पचास बार भी फिर-फिर आनी चाहिए। तब मैंने कहा कि अगर आपके जीवन में यह घटना पुन: आनी चाहिए तो आपके जीवन की कड़वी घटनायें भी पुन: होंगी क्योंकि परमात्म मिलन की घटना तो अनेक कड़वी घटनाओं का परिणाम है। तब वह माताजी कहती है, मेरा ड्रामा बहुत सुंदर है, ऐसा ही फिर से होना चाहिए। इस प्रकार ड्रामा में हर एक का पार्ट बहुत ही सुंदर और कल्याणकारी बना हुआ है। हर घटना को सकारात्मक रूप से देखो तो व्यर्थ चिंताओं से, परिस्थितियों की परेशानी से मुक्त रह सकेंगे। जीवन की हर घटना में कल्याण है।

### हमारी चार मातायें

हम सभी चार माताओं के बच्चे हैं – ब्रह्मा, मम्मा, लौकिक माँ और ड्रामा। माँ कभी अपने बच्चे को दुख नहीं देती लेकिन बच्चा अगर बीमार होता है तो दवाई पिलाती है। अगर दवाई कड़वी है तो बच्चा मुँह से बार-बार बाहर निकालता है। माँ बार-बार हाथ पकड़कर दवाई ज़रूर पिलाती है। उसको पता है कि अब भले कड़वी लग रही है लेकिन पेट में जायेगी तो अनेक बीमारियों से मुक्ति मिलेगी। इसी तरह ड्रामा रूपी माँ भी हमारे सामने ऐसी परिस्थिति लाती है। हम उसे नहीं चाहते फिर भी ऐसी परिस्थिति आती है। ड्रामा रूपी माँ को पता है कि ऐसी परिस्थितियों से ही यह वैरागी बनेगा, उपराम बनेगा, परमात्मा बाप की याद में रहेगा और जन्म-जन्मांतर के विकारों के रोगों से मुक्त बनेगा।

इसलिए जीवन की हर घटना की तरफ हम सकारात्मक दृष्टिकोण से देखें, तब बीती बातों को सहज भाव से बिसार सकेंगे, समय रूपी खज़ाने को बचाकर उसे समर्थ कार्य में लगा सकेंगे। सकारात्मक विचारों द्वारा ही वर्तमान समय का आनंद ले सकेंगे। ज्ञान का सार या जीवन का सार ही है जीवन को सकारात्मक बनायें। जिसके विचार सकारात्मक बनेंगे, उसके जीवन में कोई समस्या नहीं होगी। वही सदा संतुष्टमणि बन विश्व गगन में, भ्रकुटि आसन पर सदा जागती ज्योति बन चमकता रहेगा। यही चमक सेवाओं में परमात्म प्रत्यक्षता का साधन बनेगी। ❖

## बाबा

**प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे,**
**मंडला (म.प्र.)**

अंधकार में दीप जलाते बाबा,
रोते को सदा हंसाते बाबा।
जब भी मैं होता हूं दुख में,
तब-तब साथ निभाते बाबा।
जीवन कांटों भरी डगर है,
बनकर फूल लुभाते बाबा।
जीवन भटक जाये यदि कभी तो,
सच की राह दिखाते बाबा।
कोई नहीं हो अपना लेकिन,
सबको हरदम अपनाते बाबा।
अज्ञान, अविवेक का तम है छाया,
ज्ञान की जोत जलाते बाबा।
जो भी सो रहा अज्ञान नींद में,
उस को सदा जगाते बाबा।

# पहचानिए संकल्पों की शक्ति को

● रजनी मेहता, मोगा (पंजाब)

आज वैज्ञानिक युग में समझा जाता है कि सबसे बड़ी शक्ति एटमिक शक्ति है लेकिन इससे भी बड़ी एक शक्ति हमारे अंदर है, वो है हमारी संकल्प शक्ति। हर नकारात्मक या सकारात्मक विचार के साथ उसी प्रकार का नकारात्मक या सकारात्मक प्रकम्पन वातावरण में फैलता है। इन तरंगों को भले ही स्थूल आँखों से देखा नहीं जा सकता लेकिन इनकी शक्ति ही पूरी दुनिया में काम कर रही है। जैसे संकल्प अंदर चलते हैं, वैसे ही बाह्य जगत बनना शुरू हो जाता है।

### सोच अशान्त तो बाहर भी अशान्ति

आज पूरे विश्व में ज्यादातर लोगों के विचार नकारात्मक चल रहे हैं इसलिए उनके नकारात्मक प्रकम्पनों से भौतिक जगत में भी बहुत कुछ नकारात्मक ही हो रहा है। हमारी सोच अशान्त है तो बाहर भी अशान्ति है, सोच में हलचल है तो बाहर प्रकृति में भी हलचल है। कमियों, कमज़ोरियों और विकारों के साथ हमारा भीतरी युद्ध चलता रहता है तो बाहर भी हर जगह लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं, चाहे वह गृह-युद्ध है, उग्रवाद है या एक देश का दूसरे देश के साथ झगड़ा है।

### समस्या का मनन न करें, समाधान सोचें

बचपन से लेकर अब तक माता-पिता, शिक्षक ने सब कुछ सिखाया। चलने से लेकर, उठना, बैठना, बात करना, हर चीज़ सिखाई लेकिन कभी यह नहीं सिखाया कि सोचना कैसे है। तो इसके लिए स्वयं परमात्मा पिता शिव द्वारा बताई हुई कुछ बातों को हमें याद रखना है। एक तो यह कि जो कुछ हमारे साथ हो रहा है उसके ज़िम्मेदार हम स्वयं ही हैं। हमने ही खुशी से बीज बोया था, अब फसल को भी खुशी से स्वीकार करें। जीवन में कोई भी घटना बिना कारण नहीं होती। हम जैसा किसी के साथ करते आए थे, बिल्कुल वैसा ही हमारे साथ हो रहा है और यह बहुत कल्याणकारी है। इसलिए शिकायत की कोई वजह रह नहीं जाती। जैसी परिस्थिति आई है उसे शांत मन से स्वीकार करें और समस्या का मनन करने की बजाए समाधान को सोचें।

### सुबह दें मन को शक्तिशाली संकल्प

नकारात्मक विचार आएंगे ज़रूर लेकिन उन्हें सकारात्मक विचारों से बदल दें। सुबह उठकर अपने मन को शक्तिशाली संकल्प दें – मैं बहुत सुखी हूँ, मैं शांत हूँ, मैं भाग्यशाली हूँ। परमात्मा पिता सदा मेरे साथ है। मैं अपनी परिस्थितियों से ऊपर हूँ। मैं अपनी शक्ति से हर परिस्थिति को सहज ही पार कर सकता हूँ। ऐसे शक्तिशाली विचारों से जो तरंगें बाहर फैलती हैं उनसे हमारी परिस्थितियां सचमुच बदलने लगती हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ का हर सेवाकेन्द्र राजयोग की विधि द्वारा हमें अपने विचारों को सही दिशा देना सिखाता है। आन्तरिक संसार बदलने लगता है तो बाह्य संसार भी स्वत: ही बदल जाता है। हम अपने कड़े संस्कारों को बदलने में सहज ही सक्षम हो जाते हैं। साथ ही सामने वाले व्यक्ति को भी सकारात्मक प्रकम्पन देकर बदला जा सकता है। यह एक बहुत ही अद्भुत तरीका है। बिना कुछ कहे हम अपने आस-पास के लोगों को शुभ संकल्पों की शक्ति से बदलने लगते हैं। इससे बहुत ही सकारात्मक परिणाम हमें मिलने लगते हैं और असम्भव काम भी सम्भव होने लगते हैं। तो आइये, भाइयो और बहनो, अपनी संकल्प शक्ति को पहचानें, अपनी महानता को पहचानकर उसमें स्थित हो जाएँ। अपनी दबी हुई शक्ति को प्रकट कर प्रयोग में लाएँ और स्वयं ही स्वयं के भाग्यविधाता बन जाएँ। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

**1.इन्दौर (ओमशान्ति भवन)**- मेडिकल विंग तथा इंडियन मेडिकल एसो. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित डॉक्टर्स स्नेह मिलन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए म.प्र. के स्वास्थ्य राज्यमंत्री भ्राता महेन्द्र हार्डिया, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु. शिवानी बहन, डॉ. बनारसी लाल शाह, इंडियन मेडिकल एसो. के अध्यक्ष डॉ.अनिल भाटिया तथा अन्य। **2.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)**- वैज्ञानिक तथा अभियन्ता प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजस्थान विधानसभा उपाध्यक्ष भ्राता रामनारायण मीणा, ब्र.कु. निर्वैर भाई, डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु. मोहन सिंघल तथा अन्य। **3.दिल्ली (लाजपत नगर)**- एलिट्स इंटरनेशनल क्लब की ओर से आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए क्लब के गवर्नर भ्राता अवधेश कुमार चौबे, अंतर्राष्ट्रीय निदेशक भ्राता निर्मल शाह, ब्र.कु. शिवानी बहन, ब्र.कु. चन्द्र बहन तथा अन्य। **4.ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)**- ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित डायलाग कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय ग्राम विकास राज्यमंत्री भ्राता प्रदीप कुमार जैन, वनस्थली विद्यापीठ के कुलपति डॉ. आदित्य शास्त्री, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु. सरला बहन तथा अन्य। **5.इन्दौर**- रोटरी इंटरनेशनल क्लब के गवर्नर भ्राता लोकेन्द्र पायलाल जी, ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई जी को रोटरी क्लब की आजीवन सदस्यता से सम्मानित करते हुए। **6.शान्तिवन (आबू रोड)**- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के क्षेत्रीय प्रबंधक भ्राता डी.टी.श्रीधर से ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र.कु. भूपाल भाई ईश्वरीय सौगात देते हुए। **7.वाराणसी**- उ.प्र. की महिला कल्याण राज्यमंत्री बहन शोभू श्रीवास्तव के सम्मान में आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए बहन श्रीवास्तव, ब्र.कु. विमला बहन, डॉ. एस.के.श्रीवास्तव तथा अन्य। **8.सैदापेट (चैन्नई)**- व्यसनमुक्ति चैतन्य प्रदर्शनी को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए तमिलनाडु की समाज कल्याण मंत्री बहन बी. वलारमति, मेयर एस.दुरईसामी तथा अन्य।

**1.भीलवाड़ा**- राष्ट्रीय संत भ्राता तरुण सागर को ईश्वरीय साहित्य देते हुए ब्र.कु. इन्द्रा बहन। **2.सासाराम**- लोकसभा अध्यक्षा बहन मीरा कुमार को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. बबीता बहन तथा ब्र.कु. सुनीता बहन। **3.झाबुआ**- योगगुरु स्वामी रामदेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन। **4.सूरतगढ़**- समाज सेवक भ्राता अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन। **5.श्रीरामपुर**- भारत के पूर्व राष्ट्रपति भ्राता ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मंदा बहन, ब्र.कु. गीतांजलि बहन तथा ब्र.कु. अश्विनी बहन। **6.चिन्तामणि**- उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता वी.गोपाल गौड़ा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. श्यामला बहन। **7.खरगोन**- म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. किरण बहन। **8.कोलकाता**- भूटान की राजकुमारी बहन आशी सोनम वांगचुक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कानन बहन। **9.बयाना (भरतपुर)**- कंपनी मामलों के केन्द्रीय राज्यमंत्री सचिन पायलट को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. बबीता बहन। **10.ब्यावर**- समाजसेवक भ्राता अन्ना हजारे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विमला बहन। **11.भीकनगाँव (इन्दौर)**- म.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रुक्मिणी बहन तथा ब्र.कु. योगेश भाई। **12.कोलकाता (बारानगर)**- पश्चिमी बंगाल के उपभोक्ता मामलों के मंत्री भ्राता एस.पांडे को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु. पिंकी बहन उनके साथ।